राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन

अध्याय 2

परमेश्वर का राज्य

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1
वृहद् एवं संकीर्ण 2
अपरिवर्तनीय 2
विकासशील 3
अति प्राचीन इतिहास 7
स्थान 7
आरंभिक तैयारियाँ 8
निरंतर विस्तार 9
लोग 11
याजक 11
उप-शासक 12
प्रगति 14
वैश्विक राजद्रोह 14
भ्रष्टता और दंड 14
दीर्घावधि की रणनीति 15
इस्राएल जाति 17
स्थान 17
मूल केंद्र 18
विस्तार 19
लोग 20
इस्राएल का चयन 20
याजकों का राज्य 20
याजक और राजा 21
प्रगति 21
प्रतिज्ञा 22
निर्गमन और विजय 23
साम्राज्य 24
नया नियम 26
स्थान 27
केंद्र 27
विस्तार 29
लोग 29
मसीह 30

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

विश्वासी 31
प्रगति 32
उपसंहार 34

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन

अध्याय दो :

परमेश्वर का राज्य

परिचय

अंग्रेजी में हमारे पास एक ऐसे व्यक्ति का वर्णन करने की अभिव्यक्ति है जो विवरणों में खो जाता है। हम अक्सर कहते हैं कि ऐसा व्यक्ति "वृक्षों के कारण जंगल को नहीं देख पाता है।" अब बहुत सी संस्कृतियों में ऐसी ही अभिव्यक्तियाँ हैं. इसलिए इस बात को समझना कठिन नहीं है कि इससे हमारा क्या मतलब है। छोटी-छोटी बातों में इस हद तक खो जाना आसान होता है कि हम यह नहीं देख पाते सब बातें एक साथ कैसे उपयुक्त बैठती हैं। अत: ऐसी बहुत सी जटिल और असमंजसपूर्ण परिस्थितियों में, हम अक्सर एक-दूसरे को याद दिलाते हैं कि हम रुककर बड़ी तस्वीर को देखें।

जब हम पुराने नियम की ओर रुख करते हैं तो हमें इस सलाह को ध्यान में रखना होगा। पुराने नियम का विवरण इतना जटिल है कि कोई भी इसके अनेक नामों, स्थानों, घटनाओं, धर्मवैज्ञानिक शिक्षाओं और नैतिक निर्देशों में खो सकता है। और हम पुराने नियम में पाई जानेवाली एकता को नज़रअंदाज कर देते हैं। इस समस्या पर विजय पाने के लिए, हमें रुक कर उस बड़ी तस्वीर को देखने की ज़रूरत है जो पूरे पुराने नियम को समाहित कर ले।

यह हमारी श्रृंखला, *राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन*, का दूसरा अध्याय है। हमने इस अध्याय का शीर्षक "परमेश्वर का राज्य" दिया है। परमेश्वर का राज्य प्राचीन इस्राएल के विश्वास का मूल आधार था। इसलिए, परमेश्वर के राज्य की सही समझ हमें पुराने नियम के बारे में सबसे व्यापक और एकीकृत दृष्टिकोण प्रदान करती है।

बाइबल से परिचित हर व्यक्ति जानता है कि पुराने नियम के कैनन की पुस्तकें एक-दूसरे से बहुत भिन्न हैं। वे कई शैलियों में विभिन्न विषयों के बारे में लिखी गई थीं और उन्होंने विभिन्न समयों और परिस्थितियों में परमेश्वर के लोगों की ज़रूरतों को संबोधित किया। फिर भी, इन पुस्तकों के लेखकों ने हमेशा उन मूलभूत दृष्टिकोणों से प्रेरणा प्राप्त की जो उनमें समान रूप से थे। पुराने नियम के सभी लेखकों का मानना था कि परमेश्वर ने इतिहास की विभिन्न अवधियों में अपने लोगों के साथ प्रमुख वाचाओं की एक श्रृंखला स्थापित की थी। उनका यह भी मानना था कि ये सभी वाचाएँ एक मुख्य उद्देश्य को पूरा करने के लिए स्थापित की गई थीं, अर्थात् परमेश्वर के राज्य का प्रबंधन करने के लिए ताकि यह पृथ्वी की छोर तक फैल जाए।

यह अध्याय परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने के लिए इस्राएल के एकीकृत, मूलभूत समर्पण के चार पहलुओं के बारे में बात करेगा। पहला, हम देखेंगे कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर के राज्य या शासन के बारे में वृहद् और संकीर्ण दोनों अर्थों में कैसे बात करता है। दूसरा, हम पृथ्वी के इतिहास के आरंभिक चरणों में, अर्थात् अति प्राचीन इतिहास के दौरान परमेश्वर के राज्य को देखेंगे। तीसरा, हम इस्राएल राष्ट्र के इतिहास में परमेश्वर के राज्य के विकास का अध्ययन करेंगे। और चौथा, हम देखेंगे कि परमेश्वर के राज्य की पुराने नियम की अवधारणा नए नियम के युग में कैसे अपनी पूर्णता तक पहुँचती है। आइए सबसे पहले देखें कि किस प्रकार पुराना नियम व्यापक और संकीर्ण दोनों अर्थों में परमेश्वर के शासन के बारे में बात करता है।

चलचित्र, अध्याय मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ - Thirdmill at thirdmill.org.

वृहद् एवं संकीर्ण

अधिकांश मसीहियों ने परमेश्वर के राज्य के बारे में सुना है क्योंकि नए नियम में इसका उल्लेख बहुत बार किया गया है। केवल मत्ती, मरकुस और लूका के सुसमाचारों में परमेश्वर के राज्य के 60 से अधिक उल्लेख पाए जाते हैं। इस अध्याय में, हम देखेंगे कि कैसे नए नियम में परमेश्वर के राज्य पर दिया गया यह बल पुराने नियम में निहित है। राज्य और साम्राज्य, राजा और सम्राट प्राचीन इस्राएलियों के अनुभव से इतना जुड़े हुए थे कि बाइबल के लेखकों को परमेश्वर के राज्य की स्पष्ट और संक्षिप्त व्याख्या प्रदान करने की कोई जरूरत महसूस नहीं हुई। परंतु यह बात आज आपके और मेरे लिए एक बड़ी समस्या खड़ी कर देती है। पुराने नियम के प्राचीन संसार से हमारी दूरी के कारण, हमें परमेश्वर के राज्य की उस मूल अवधारणा को संक्षेप में बताने के द्वारा शुरू करना चाहिए जो पुराने नियम के हर पृष्ठ पर पाई जाती है।

यह सारांश निकालने के कई तरीके हैं कि पुराना नियम किस प्रकार परमेश्वर के राज्य की बात करता है, परंतु हम केवल दो दिशाओं में देखेंगे। सबसे पहले, हम देखेंगे कि, एक वृहद् अर्थ में, परमेश्वर का शासन पूर्ण और अपरिवर्तनीय है। और दूसरा, एक संकीर्ण अर्थ में, परमेश्वर का शासन अधूरा भी है और पूरे इतिहास में विकसित हो रहा है। आइए पहले परमेश्वर के पूर्ण और अपरिवर्तनीय शासन पर विचार करें।

अपरिवर्तनीय

भजन 93:1-2 में हम सृष्टिकर्ता परमेश्वर के लिए यह स्तुतिगान पाते हैं :

> **यहोवा राजा है; उसने माहात्म्य का पहिरावा पहिना है... वह सामर्थ्य का फेटा बाँधे है। इस कारण जगत स्थिर है, वह नहीं टलने का। तेरी राजगद्दी अनादिकाल से स्थिर है, तू सर्वदा से है (भजन 93:1-2)।**

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, इस बात ने कि परमेश्वर ने सब कुछ बनाया और बनाए रखा है, भजनहार को यह कहने के लिए प्रेरित किया, "यहोवा राजा है।" वह समस्त सृष्टि पर सर्वोच्च राजा है। बार-बार, पुराना नियम इस मूलभूत अवधारणा को स्वीकार करता है। परमेश्वर ने सब वस्तुओं को बनाया है और उन्हें बनाए रखता है, और वह सब पर सर्वोच्च है। इस व्यापक अर्थ में उसका शासन या राज्य सार्वभौमिक और अपरिवर्तनीय है।

सृष्टिकर्ता और पालनकर्ता के रूप में परमेश्वर के अटूट, सार्वभौमिक शासन में यह विश्वास प्राचीन इस्राएलियों के विश्वास और उनके आसपास के देशों के धर्मों के बीच एक सबसे महत्वपूर्ण अंतर है। आस-पास के धर्म आमतौर पर सिखाते थे कि विभिन्न देवता सर्वोच्च बनने के लिए एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते थे और बदलती परिस्थितियों के साथ इन देवताओं की शक्ति घटती और बढ़ती रहती थी। कुछ विषयों में, ऐसा माना जाता था कि ऋतुओं के वार्षिक चक्र के साथ देवता अधिकार के पदों पर उठते और गिरते रहते थे। अन्य विषयों में, यह माना जाता था कि जब उनके पसंदीदा राष्ट्र युद्ध में जीत और हार का अनुभव करते थे तो देवता स्वर्गीय अधिकार के पदों पर उठते और गिरते रहते थे।

लेकिन ऐसी अवधारणाएँ बाइबल के विश्वास का हिस्सा नहीं थीं। इस्राएल का परमेश्वर यहोवा *सब वस्तुओं* का एकमात्र सृष्टिकर्ता और पालनहार था, वह संपूर्ण सृष्टि पर अटल शासक था — यहाँ तक कि शक्तिशाली आत्मिक प्राणियों या तथाकथित "देवताओं" पर भी। प्रकृति के हर चक्र, अर्थात् युद्ध में मिली हर हार और जीत के द्वारा, परमेश्वर का शासन सार्वभौमिक और अपरिवर्तनीय रहा है। और इस अर्थ में, संपूर्ण सृष्टि सदैव उसका राज्य रही है और सदैव रहेगी।

> अतः परमेश्वर सब कुछ के ऊपर राजा है। आप इसे उत्पत्ति 1 में देखते हैं कि कैसे सृष्टि की हर वस्तु उसकी आज्ञा मानती है। भजन 24 कहता है, "पृथ्वी और जो कुछ उसमें है यहोवा ही का है," क्योंकि उसी ने इसे बनाया है। "वह प्रतापी राजा कौन है? [वह] प्रभु है!" देखिए, वह सब कुछ के ऊपर राजा है। वह सब कुछ का स्वामी है और यह सच्चाई कभी नहीं बदलती... यदि आप उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक बाइबल को ढूँढ़ते हैं, तो आप परमेश्वर को सृष्टि के मनुष्यजाति सहित हर पहलू, सब कुछ पर प्रभुता रखते हुए देखते हैं।
>
> — डॉ. जोनाथन डी. वर्दिंगटन

> परमेश्वर पूरी तरह से संप्रभु है, और यह वह मान्यता है जिसे आर्मीनियाई और कैल्विनवादी दोनों मानते हैं। यह एक ऐसी स्थिति है जो पवित्रशास्त्र में बिल्कुल स्पष्ट है; परमेश्वर पूरी तरह से संप्रभु है और हम हर समय उसकी इच्छा का पालन करते हैं, और हमारी पसंद उसकी इच्छा को पलटती नहीं है। हमारी पसंद उसकी संप्रभु इच्छा के अनुरूप होनी चाहिए।
>
> — डॉ. ग्रांट आर. ओसबोर्न

व्यापक अर्थ में कहें तो, यद्यपि पुराने नियम के लेखकों का विश्वास था कि सृष्टि पर परमेश्वर का शासन पूर्ण और अपरिवर्तनीय है, फिर भी उन्होंने एक दूसरे, संकीर्ण भाव में भी बात की जिसमें परमेश्वर का राज्य या शासन अधूरा था और इतिहास में विकसित हो रहा था।

विकासशील

जब पवित्रशास्त्र परमेश्वर के राज्य के बारे में ऐसे बात करता है कि वह विकसित हो रहा है, तो वह इस बात पर ध्यान देता हैं कि कैसे परमेश्वर समय के साथ-साथ अपनी अटूट संप्रभुता को प्रदर्शित या प्रकट करता है। अब, अधिकांश आधुनिक मसीही कभी ऐसे राज्य में नहीं रहे जहाँ मानवीय राजाओं का अपने राष्ट्रों पर सर्वोच्च निरंकुश अधिकार हो। इसलिए हम अक्सर यह देखने में असफल रहते हैं कि बाइबल में यह विषय कितना प्रमुख है। इतिहास में परमेश्वर द्वारा अपने राजत्व को प्रकट करने का उल्लेख करने के लिए, पुराने नियम के लेखकों ने अक्सर ईश्वरीय और मानवीय राजाओं के ऐसे सामान्य चित्रणों का इस्तेमाल किया जिन्हें हम आज नहीं पहचानते। उदाहरण के लिए, उन्होंने परमेश्वर को एक राजकीय वास्तुकार और निर्माणकर्ता, अपने लोगों के राजकीय पिता, व्यवस्था देनेवाले और वाचा बाँधनेवाले के रूप में बताया। उन्होंने परमेश्वर का वर्णन एक राजकीय योद्धा, एक पति और एक चरवाहे के रूप में किया।

आधुनिक लोग अक्सर राजाओं और साम्राज्यों को बहुत ही अवैयक्तिक, यहाँ तक कि घृणित राजनीतिक व्यवस्था के रूप में मानते हैं। परंतु पृथ्वी पर आने वाले परमेश्वर के ऐतिहासिक राज्य का बाइबल-आधारित विषय समृद्ध है, और यह एक शानदार रूपक भी है। यह समस्त सृष्टि पर एकमात्र संप्रभु के रूप में परमेश्वर की अद्भुतता और पृथ्वी पर उसके राज्य को हमारे गौरवशाली आदर्श के रूप में दर्शाता है।

पूरे पुराने और नए नियम में, परमेश्वर ने अपने स्वर्गीय सिंहासन से राजकीय आदेश जारी किए। उसने अपने राज्य के लोगों से उसी प्रकार प्रेम रखा जैसे एक पिता अपने बच्चों से रखता है। उसने अपने स्वर्गदूतों को और मानवीय सेनाओं को कार्य करने के लिए बुलाया। जब उसने इस्राएल सहित अपने पसंदीदा राष्ट्रों को स्थापित और पराजित किया, तब उसने राजा के रूप में कार्य किया। परमेश्वर के

शासन की इन ऐतिहासिक अभिव्यक्तियों का बड़ा लक्ष्य यह था कि हर प्राणी यह स्वीकार करे कि परमेश्वर राजा है। अंततः संपूर्ण सृष्टि प्रत्येक जाति और राष्ट्र के परमेश्वर के लोगों के लिए प्रेम, आनंद, भलाई, न्याय, चंगाई और शांति का स्थान होगी। और परमेश्वर पृथ्वी को अपनी दृश्यमान महिमा से भर देगा और इस कारण असीमित स्तुति को प्राप्त करेगा कि वह कौन है और उसने क्या किया है।

इस पुराने नियम के विषय को प्रस्तुत करने का एक सरल तरीका "प्रभु की प्रार्थना" के शुरू के शब्दों की ओर मुड़ना है। मत्ती 6:9-10 में यीशु ने परमेश्वर के बढ़ते हुए राज्य पर पुराने नियम के दृष्टिकोण को संक्षेप में प्रस्तुत किया जब उसने अपने चेलों को इस रीति से प्रार्थना करना सिखाया :

> हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो (मत्ती 6:9-10)।

जब यीशु ने हमें प्रार्थना करना सिखाया, "तेरा राज्य आए," तो उसने वह व्यक्त किया जो पुराने नियम का हर लेखक देखना चाहता था। मसीहियों के लिए परमेश्वर के राज्य के आगमन की बात करना काफी आम है, परंतु अक्सर हमें यह एहसास नहीं होता कि कैसे यह मसीही विश्वास पुराने नियम में निहित है। इसलिए, हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि यीशु का क्या अर्थ था जब उसने हमें परमेश्वर के राज्य के आगमन के लिए प्रार्थना करना सिखाया।

> जब यीशु भजनों के संपूर्ण संकलन से बातों को लेते हुए अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखाता है, तो वह उसे एक विश्वासयोग्य प्रार्थना की इस आधारभूत रूपरेखा में सीमित करता है। परंतु प्रार्थना इस से शुरू होती है : "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा पूरी हो" अब ध्यान दें कि, यीशु के लिए भी परमेश्वर पिता का रूप सीधे-सीधे उसके राजत्व से जुड़ा हुआ है। परमेश्वर केवल एक पिता नहीं है, वह एक राजा-पिता है। और इसलिए, एक विश्वासयोग्य पुत्र के रूप में, जब आप अपने पिता के सामने आते हैं तो आप चाहते हैं कि उसके राज्य का विस्तार हो। आप उसके शासन को मानवीय जीवन के हर पहलू पर लागू होते देखना चाहते हैं।
>
> — डॉ. स्कॉट रेड

प्राचीन इब्रानी कविता की परंपरा का पालन करते हुए, यीशु ने जब हमें परमेश्वर के राज्य के आगमन के लिए प्रार्थना करना सिखाया, तो उसने उसका अर्थ भी समझाया। सबसे पहले, यीशु ने परमेश्वर को ऐसे "पिता जो स्वर्ग में है" के रूप में दर्शाया, जो परमेश्वर को राजकीय पिता, राजा, स्वर्ग में सिंहासन पर विराजमान होने के रूप में दर्शाता है। और उसने हमें परमेश्वर का नाम पवित्र बने रहने के लिए प्रार्थना करना सिखाया - "तेरा नाम पवित्र माना जाए।" इस विनती को विस्तार से बताते हुए, उसने माना कि जब उसका राज्य आएगा तो परमेश्वर का नाम पवित्र रहेगा। और फिर, यह समझाने के लिए कि परमेश्वर के राज्य के आगमन से उसका क्या अर्थ है, यीशु ने कहा कि परमेश्वर का पूर्ण राज्य या शासन तब आएगा जब उसकी इच्छा पूरी होगी। परंतु ध्यान दें कि यीशु कहाँ चाहता था कि परमेश्वर की इच्छा पूरी हो : "जैसी स्वर्ग में... वैसे पृथ्वी पर।" आज के कई मसीहियों के विश्वास के विपरीत, यीशु ने यह नहीं सिखाया कि इतिहास का लक्ष्य परमेश्वर के लोगों का स्वर्ग में परमेश्वर के साथ अनंतता बिताना है। बल्कि, यीशु ने सिखाया कि इतिहास का लक्ष्य परमेश्वर की इच्छा का पृथ्वी पर वैसे पूरा होना है जैसे यह स्वर्ग के सिंहासन कक्ष में पूरी होती है।

> हमारी निश्चित आशा यह है कि एक दिन आ रहा है जब परमेश्वर सब बातों को नया करेगा... हम इसे विशेष रूप से उन सुंदर शब्दों में देख सकते हैं जिन्हें यीशु ने हमें, अपने चेलों को प्रार्थना में सिखाए, उसने कहा, "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में

> है, तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आए, और तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो" वह महत्वपूर्ण, केंद्रीय, मूलभूत मसीही विचार यह है कि हम अब स्वर्ग की वास्तविकताओं के पृथ्वी की वास्तविकताएँ बनने की प्रतीक्षा के समय में रह रहे हैं, जिस तरह स्वर्ग में कार्य होते हैं जब परमेश्वर को पवित्र माना जाता है, जब सब बातें सही होती हैं, और धार्मिकता और महिमा और सत्य और प्रेम राज्य करता है; मसीहियों के रूप में हमारी आशा, हमारी निश्चित आशा यह है कि स्वर्ग की वे वास्तविकताएँ पृथ्वी की वास्तविकताएँ बन जाएँगी। और यह वही है जिसकी पवित्रशास्त्र आशा में नई सृष्टि, अर्थात् हमारे अनंत घर के रूप में प्रतिज्ञा करता है।
>
> — डॉ. जोनाथन टी. पेनिंगटन

इस बात को बेहतर ढंग से समझने के लिए कि कैसे यीशु ने आशा की थी कि पृथ्वी स्वर्ग जैसी बन जाएगी, दानिय्येल 7:9-10 पर विचार करें। यहाँ हमें परमेश्वर के स्वर्गीय सिंहासन कक्ष का पुराने नियम का एक विशिष्ट चित्र मिलता है :

> सिंहासन रखे गए, और कोई अति प्राचीन विराजमान हुआ; उसका वस्त्र हिम–सा उजला, और सिर के बाल निर्मल ऊन सरीखे थे; उसका सिंहासन अग्निमय और उसके पहिये धधकती हुई आग के से दिखाई पड़ते थे। उस प्राचीन के सम्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही थी; फिर हज़ारों हज़ार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे, और लाखों लाख लोग उसके सामने हाजिर थे; फिर न्यायी बैठ गए, और पुस्तकें खोली गईं (दानिय्येल 7:9-10)।

स्वर्ग का यह चित्र असामान्य नहीं है। परमेश्वर के स्वर्गीय सिंहासन कक्ष के ऐसे ही विवरण पुराने और नए नियम में मिलते हैं। परंतु दानिय्येल के दर्शन के कम से कम दो पहलू ऐसे हैं जिन पर हमें प्रकाश डालना चाहिए।

एक ओर, परमेश्वर अपने स्वर्गीय सिंहासन कक्ष में प्राणियों के सामने अपनी दृश्यमान, महिमामय उपस्थिति को प्रदर्शित करता है। जैसे कि पवित्रशास्त्र सिखाता है, परमेश्वर सर्वव्यापी है — वह हर जगह है। वह बाहरी अंतरिक्ष की सारी विशाल आकाशगंगाओं में, हमारे छोटे से ग्रह पर, हरे-भरे जंगलों और सूखे रेगिस्तानों में, हर छोटे गाँव और हर बड़े शहर में उपस्थित है। फिर भी, अपनी सर्वव्यापकता में, वह अधिकतर अदृश्य रहता है। फिर भी, जैसा कि दानिय्येल का दर्शन और पवित्रशास्त्र के कई अन्य भाग हमें बताते हैं, परमेश्वर की उपस्थिति स्वर्ग के सिंहासन कक्ष में उपस्थित हर प्राणी को दिखाई देती है। परमेश्वर चमकते श्वेत वस्त्र पहने हुए और ऊन के समान सफेद बालों के साथ अपने सिंहासन पर विराजमान है। उसका सिंहासन आग से दमक रहा है, और उसके सिंहासन से भस्म करनेवाली आग बहती है।

स्वर्ग का यह चित्र उस विरोधाभास का एक पहलू है जिसे स्वर्ग और पृथ्वी के बीच यीशु की प्रार्थना ने माना था। हाँ, हम सृष्टि के आश्चर्यों में परमेश्वर की महिमा को प्रकट होता देखते हैं। और बाइबल के इतिहास में, परमेश्वर की महिमा कभी-कभी पृथ्वी पर दिखाई देती थी। लेकिन परमेश्वर की महिमा की इन झलकियों की तुलना परमेश्वर के स्वर्गीय सिंहासन कक्ष में परमेश्वर के बड़ी महिमा से नहीं की जा सकती। इसलिए, जब यीशु ने हमें परमेश्वर के राज्य के, जैसा कि वह स्वर्ग में है, पृथ्वी पर आने के लिए प्रार्थना करने हेतु बुलाया, तो उसने हमें परमेश्वर की दृश्यमान महिमा के बड़े वैभव के पृथ्वी में भरने के लिए प्रार्थना करने हेतु बुलाया, जैसे वह पहले से ही स्वर्ग में पाई जाती है। प्रकाशितवाक्य 21:23 में प्रेरित यूहन्ना के मन में यही बात थी जब उसने नए यरूशलेम की महिमा का वर्णन किया जो मसीह के पुनरागमन पर पृथ्वी पर उतरेगी। यूहन्ना के शब्दों को सुनिए :

> उस नगर में सूर्य और चाँद के उजियाले की आवश्यकता नहीं, क्योंकि परमेश्वर के तेज से उस में उजियाला हो रहा है, और मेम्ना उसका दीपक है (प्रकाशितवाक्य 21:23)।

जब यीशु ने हमें परमेश्वर के राज्य के, जैसा कि वह स्वर्ग में है, पृथ्वी पर आने के लिए प्रार्थना करना सिखाया, तो उसका अर्थ था कि हमें यह लालसा रखनी और प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर पृथ्वी को उसके महिमामय, राजकीय वैभव से भर दे।

दूसरी ओर, दानिय्येल का स्वर्ग का दर्शन भी परमेश्वर की वैभवशाली, महिमामय उपस्थिति को वहाँ उपस्थित प्राणियों की गतिविधियों के साथ जोड़ती है। जैसा कि हम दानिय्येल 7:10 में पढ़ते हैं :

> हज़ारों हज़ार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे, और लाखों लाख लोग उसके सामने हाजिर थे (दानिय्येल 7:10)।

स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन के सामने अनगिनत प्राणी उसकी सेवा करते हैं, उसकी आराधना करते हैं, और विनम्रतापूर्वक उसके आदेश का पालन करते हैं।

> स्वर्ग में स्वर्गदूत वास्तव में स्वर्ग के याजकों के रूप में कार्य करते हैं; वे दिन रात उसके मन्दिर में परमेश्वर की सेवा करते हैं, और दिन रात उसकी आराधना करते हैं। वे यहाँ पृथ्वी पर हमारे लिए परमेश्वर के संदेशवाहकों और परमेश्वर के सहायकों के रूप में भी काम करते हैं — यह पूरे पवित्रशास्त्र में बहुत स्पष्ट है। लेकिन नियंत्रण पूर्ण है; यह नियंत्रण परमेश्वर का है और केवल परमेश्वर का ही है।
>
> — डॉ. ग्रांट आर. ओसबोर्न

> जो कुछ भी घटित हो रहा है, परमेश्वर उस पर सर्वोच्च है। वह कम से कम इसकी अनुमति दे रहा है, लेकिन जो कुछ घटित हो रहा है, उसमें से कई बातों का वह समर्थन या अनुमोदन नहीं करता है। लेकिन एक दिन हम ऐसे राज्य का अनुभव करने जा रहे हैं जब लोग परमेश्वर की नैतिक इच्छा का पालन करेंगे। वे स्वेच्छा से ऐसा करेंगे क्योंकि उनके हृदयों पर व्यवस्था लिखी हुई होगी।
>
> — डॉ. रॉबर्ट बी. चिज्म, जूनियर

यही कारण है कि फिलिप्पियों 2:10-11 में प्रेरित पौलुस उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा था जब :

> जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें; और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकर कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है (फिलिप्पियों 2:10-11)।

प्रभु की प्रार्थना की शुरुआती पंक्तियों में, यीशु ने परमेश्वर के राज्य के पुराने नियम के विषय को एक विकासशील, ऐतिहासिक, सांसारिक वास्तविकता के रूप में सारगर्भित किया। पूरे इतिहास में परमेश्वर के सभी विश्वासयोग्य भविष्यवक्ताओं के समान, परमेश्वर के पुत्र ने उस दिन की लालसा की जब परमेश्वर का सार्वभौमिक और अपरिवर्तनीय राजत्व पूरी तरह से पृथ्वी पर प्रकट होगा। उस दिन, परमेश्वर की महिमा पृथ्वी पर भर जाएगी और पृथ्वी का प्रत्येक प्राणी उसकी आज्ञाओं का वैसे ही सिद्धता से पालन करेगा जैसे वे स्वर्ग में करते हैं। इतिहास का यह दर्शन पुराने और नए नियम की प्रत्येक शिक्षा का आधार है।

अब जब हमने इस अंतर को जान लिया है कि पवित्रशास्त्र व्यापक और संकीर्ण दोनों अर्थों में परमेश्वर के राज्य के बारे में कैसे बात करता है, तो हम यह पता लगाने की स्थिति में हैं कि बाइबल पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के ऐतिहासिक विकास को कैसे चित्रित करती है। हम समय की उस अवधि से शुरुआत करेंगे जिसे अक्सर "अति प्राचीन इतिहास" कहा जाता है, वह उत्पत्ति 1:1-11:9 में बताई गई घटनाओं को शामिल करता है।

अति प्राचीन इतिहास

जब आधुनिक सुसमाचारिक लोग उत्पत्ति के अति प्राचीन इतिहास को पढ़ते हैं, तो हम अक्सर इस बात में व्यस्त रहते हैं कि यह पृथ्वी की आयु, मानवीय जीवन की उत्पत्ति और अन्य समकालिक वैज्ञानिक विषयों के बारे में क्या कहता है। ये विषय महत्वपूर्ण हैं, लेकिन ये आसानी से हमारा ध्यान इस बात से दूर खींचते हैं कि कैसे इन अध्यायों ने सबसे पहले प्राचीन इस्राएलियों को इस बात के शुरुआती चरणों से परिचित कराया कि पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का विकास कैसे हुआ । जैसा कि हम देखने वाले हैं, अति प्राचीन इतिहास में इस बात पर जोर दिया गया कि कैसे परमेश्वर ने इस समय राजा के रूप में कार्य किया — कैसे उसने दृश्यमान संसार को बनाने, व्यवस्थित करने और लोगों से भरने के लिए अपने राजकीय अधिकार का इस्तेमाल किया ताकि यह वह स्थान बन जाए जहाँ वह स्वर्ग से अपना सर्वोच्च शासन कर सके। .

> अति प्राचीन इतिहास उस इतिहास को शामिल करता है जिसे हम उत्पत्ति 1-11 में देखते हैं; यह अब्राहम से पूर्व का इतिहास है। अतः यह संसार की उत्पत्ति को शामिल करता है जैसा कि हम उत्पत्ति 1 में पाते हैं। यह मनुष्यजाति की रचना को भी शामिल करता है, अर्थात् इस संसार में मनुष्यजाति कैसे अस्तित्व में आई। इसमें सब्त के साथ-साथ विवाह, विवाह के संबंध, और अब्राहम से पहले अपने लोगों के साथ परमेश्वर के व्यवहार को शामिल किया गया है, अतः परमेश्वर ने नूह और जल-प्रलय से कैसे व्यवहार किया।
>
> — डॉ. डेनियल सिमांगो

हम तीन विषयों के बारे में बात करके यह पता लगाएँगे कि कैसे अति प्राचीन इतिहास पृथ्वी के इतिहास में परमेश्वर के विकासशील राज्य या शासन का परिचय देता है : पहला, बाइबल का यह भाग पृथ्वी को परमेश्वर के राज्य के स्थान के रूप में कैसे दर्शाता है; दूसरा, यह परमेश्वर के राज्य के उद्देश्यों के लिए लोगों की पहचान कैसे करता है; और तीसरा, यह इस अवधि के दौरान परमेश्वर के राज्य की आरंभिक प्रगति को कैसे दर्शाता है। आइए सबसे पहले पृथ्वी को परमेश्वर के राज्य के स्थान के रूप में देखें।

स्थान

उत्पत्ति के शुरुआती अध्यायों से पता चलता है कि पृथ्वी को कई रूपों में परमेश्वर के राजकीय शासन का स्थान बनाया गया था, लेकिन हम केवल दो रूपों पर ध्यान केंद्रित करेंगे। पहला, हम देखेंगे कि परमेश्वर की सृष्टि की शुरूआती तैयारियों ने कैसे पृथ्वी के लिए उसके राजकीय उद्देश्यों को दर्शाया। और दूसरा, हम देखेंगे कि कैसे परमेश्वर ने पृथ्वी पर अपने राज्य के निरंतर विस्तार के लिए मंच तैयार

किया। आइए हम सृष्टि की शानदार राजकीय योजना में परमेश्वर की आरंभिक तैयारियों को देखकर शुरु करें।

आरंभिक तैयारियाँ

यह समझने के लिए कि पृथ्वी पर अपने राज्य के लिए परमेश्वर की प्रारंभिक तैयारियों के बारे में अति प्राचीन इतिहास क्या कहता है, हमें कुछ समय के लिए अपने कई आधुनिक प्रश्नों को अलग रखना होगा। हमें सबसे पहले यह पूछने की ज़रूरत है कि प्राचीन इस्राएलियों ने उत्पत्ति 1:1-2:3 में उत्पत्ति की कहानी को कैसे समझा। यह इस बात को जानने में सहायता करता है कि प्राचीन जगत में, ईश्वरीय और मानवीय दोनों राजाओं को अक्सर महान वास्तुकारों और निर्माताओं के रूप में सम्मानित किया जाता था। इन पंक्तियों के साथ, कई व्याख्याकारों ने दिखाया है कि सृष्टि की कहानी परमेश्वर को सच्चे ईश्वरीय राजकीय वास्तुकार और निर्माता के रूप में प्रस्तुत करती है जिसने सृष्टि को अपने विशाल राजकीय महल के रूप में तैयार किया था। हर बार जब सृष्टि का विवरण परमेश्वर को यह कहते हुए दर्शाता है, "[यह या वह] हो जाए", तो यह परमेश्वर को उसके स्वर्गीय सिंहासन से राजकीय आदेशों के द्वारा सृष्टि की रचना का निर्देशन करते हुए दिखाता है। इसी तरह, अन्य प्राचीन साहित्य में पाए जानेवाले समानांतर वृत्तांत संकेत करते हैं कि सब्त के दिन परमेश्वर के विश्राम ने परमेश्वर को सृष्टि पर अपने राजकीय अधिकार और सामर्थ्य को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए सम्मान प्राप्त करने हेतु अपने सिंहासन पर विश्राम करते हुए दर्शाया। इन और अन्य तरीकों से, उत्पत्ति की पुस्तक की शुरुआत ने प्राचीन इस्राएल को सिखाया कि कैसे उनके परमेश्वर, ईश्वरीय वास्तुकार और निर्माता ने सबसे पहले स्वर्ग से अपनी राजकीय सामर्थ्य को दृश्यमान संसार में बढ़ाया।

सृष्टि की कहानी उत्पत्ति 1:1 में इन परिचित शब्दों से शुरू होती है :

> आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की (उत्पत्ति 1:1)।

ये आरंभिक शब्द इस सच्चाई को स्थापित करते हैं कि परमेश्वर ने दो क्षेत्र या स्तर बनाए — ऊपर स्वर्ग और नीचे दृश्यमान पृथ्वी। उत्पत्ति 1:2-2:3 में परमेश्वर ने पृथ्वी को एक ऐसे स्थान के रूप में बनाना शुरू किया जहाँ वह अपने गौरवशाली शासन को स्वर्ग से पृथ्वी तक बढ़ाए। हम उत्पत्ति के इस भाग को तीन खंडों में विभाजित कर सकते हैं, जिसकी शुरुआत संसार की आरंभिक गड़बड़ी के साथ होती है। सुनिए किस प्रकार उत्पत्ति 1:2 पृथ्वी का वर्णन करता है :

> पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी, और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था; तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था (उत्पत्ति 1:2)।

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, सबसे पहले पृथ्वी, या स्वर्ग के नीचे की सृष्टि, "बेडौल और सुनसान" थी, और उसके ऊपर गहरा जल और अंधकार था।

इस बिंदु पर, पृथ्वी परमेश्वर के महिमामय स्वर्गीय सिंहासन कक्ष के बिल्कुल विपरीत खड़ी थी। जैसा कि हमने अभी देखा, पूरे पवित्रशास्त्र में स्वर्ग परमेश्वर की चकाचौंध कर देनेवाली महिमा से भरा हुआ है, लेकिन पृथ्वी इस समय ऐसी नहीं थी। यहाँ "बेडौल" और "सुनसान" के रूप में अनूदित इब्रानी शब्दों का प्रयोग पुराने नियम में अन्य स्थानों पर अन्यत्र पृथ्वी के जंगली और रेगिस्तानी स्थानों को दर्शाने के लिए किया जाता है, ऐसे स्थान जो मनुष्यों के लिए काफी हद तक निर्जन हैं। और "अंधियारा" तथा "गहरा जल" शब्दों का पूरे पवित्रशास्त्र में बहुत नकारात्मक अर्थ है।

लेकिन उत्पत्ति 1:2 हमें पृथ्वी के इतिहास के आरंभ के बारे में एक और आवश्यक तथ्य बताता है यह कहता है, "परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था।" प्रकाश और जीवन का परमेश्वर पृथ्वी को उसकी आरंभिक गड़बड़ी की स्थिति में छोड़ने में संतुष्ट नहीं था। उसका आत्मा अंधकारमय, जीवनरहित संसार पर मंडराने लगा।

उत्पत्ति 1 के सृष्टि के वृत्तांत का दूसरा प्रमुख भाग, पद 3-31 में परमेश्वर द्वारा संसार को एक भव्य भवन में बदलने के छः दिनों का है। ये छः दिन एक स्पष्ट पद्धति को प्रकट करते हैं जो परमेश्वर की अद्वितीय शिल्प बुद्धि और सामर्थ्य को प्रकट करती है।

पहले तीन दिनों में, परमेश्वर ने इस बात को सुधारा कि संसार बेडौल था। अगले तीन दिनों में, उसने इस बात को सुधारा कि संसार सुनसान पड़ा था। दिनों के इन दो समूहों में परमेश्वर के कार्य महत्वपूर्ण तरीकों से एक-दूसरे के समानांतर हैं। पहले दिन परमेश्वर ने दिन को बनाया और अंधेरे को रात तक सीमित कर दिया। और उसके बाद, चौथे दिन उसने इस व्यवस्था को बनाए रखने के लिए सूर्य, चंद्रमा और तारों को आकाश में रखा। दूसरे दिन, परमेश्वर ने नीचे के जल को ऊपर के जल से अलग करते हुए, आकाशमंडल को बनाया। फिर पांचवें दिन, परमेश्वर ने जल के बीच के स्थान को पक्षियों से भर दिया, और नीचे के जल को समुद्री जीवों से भर दिया। तीसरे दिन परमेश्वर ने हरी-भरी, उपजाऊ भूमि बनाकर नीचे के जल को रोक दिया। और छठे दिन, परमेश्वर ने भूमि के जानवरों और मनुष्यजाति को सूखी भूमि पर रखा। परमेश्वर ने संसार को व्यवस्थित करते और लोगों से भरते समय अतुलनीय राजकीय बुद्धि और सामर्थ्य को प्रकट किया।

सृष्टि की कहानी का तीसरा और समाप्ति का खंड 2:1-3 में सब्त के दिन को दर्शाता है। पिछले पदों की तरह, यह विवरण भी परमेश्वर को राजकीय शिल्पकार और सृष्टि के निर्माता के रूप में प्रकट करता है। हम उत्पत्ति 2:3 में यह पढ़ते हैं :

> परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया; क्योंकि उसमें उसने सृष्टि की रचना के अपने सारे काम से विश्राम लिया (उत्पत्ति 2:3)।

यहाँ, तस्वीर यह है कि परमेश्वर स्वर्ग में अपने सिंहासन पर वापस बैठा, अपनी उपलब्धियों से प्रसन्न हुआ, और जो कुछ उसने किया था उसके लिए सम्मान प्राप्त किया। उनका काम इतना भव्य था कि बाद में, दस आज्ञाओं में, परमेश्वर ने इस्राएल को हर सब्त के दिन उसकी उपलब्धियों को याद करने की आज्ञा दी।

वास्तव में, उत्पत्ति 1:1-2:3 हमें बताता है कि छः दिन परमेश्वर ने अपने स्वर्गीय सिंहासन से राजकीय आदेश जारी किए, जिसने संसार को अंधेरे और गड़बड़ी से एक भव्य राजकीय भवन में बदल दिया। और अंत में, परमेश्वर ने राजकीय शिल्पकार और सृष्टि के निर्माता के रूप में जो कुछ किया उसके लिए उसे सम्मान मिला।

हमने देखा है कि उत्पत्ति की शुरुआत में कैसे परमेश्वर ने अपने राज्य के उद्देश्यों के लिए आरंभिक तैयारियाँ कीं। अब हमें इस राजकीय रचना की एक विशेष विशेषता की ओर मुड़ना चाहिए जिसे अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। परमेश्वर ने यह भी प्रकट किया कि उसने पृथ्वी के छोर तक अपने राजकीय शासन के निरंतर विस्तार को निर्धारित किया था।

निरंतर विस्तार

उत्पत्ति 1:3-30 हमें छः बार बताता है कि जब परमेश्वर ने अपनी सृष्टि को देखा, तो उसने पाया कि यह "अच्छी" है। और पद 31 में, छठे दिन, उसने अपने काम को देखा और पाया कि उसने जो कुछ बनाया था वह "बहुत अच्छा" था। "अच्छा" — इब्रानी में तोव (טוֹב) — के रूप में अनूदित शब्द का यहाँ और पुराने नियम के अन्य स्थानों पर यह अर्थ है, "मनोहर," "सुखद," और यहाँ तक कि "सुंदर"। जब बाइबल कहती है कि सृष्टि अच्छी थी, तो इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने अपने कार्य को अनुमोदित किया। लेकिन जैसा कि हम देखने वाले हैं, परमेश्वर ने जो किया था वह पृथ्वी पर होने वाले किसी बड़े कार्य की शुरुआत मात्र थी।

अक्सर, बहुत से जानकार मसीही भी त्रुटिपूर्ण रूप से मानते हैं कि जब परमेश्वर ने कहा कि उसकी सृष्टि "बहुत अच्छी" है, तो उसका अर्थ था कि अब करने के लिए कुछ भी नहीं बचा है या उसमें सुधार की

कोई जरूरत नहीं है। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं था। आख़िरकार, उत्पत्ति 2:18 में परमेश्वर ने यह भी कहा था, "आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं।" अंधकार, गड़बड़ी और गहरा जल जिन्होंने एक समय संसार को घेर रखा था, उन्हें केवल सीमित किया गया था; उन्हें हटाया नहीं गया था। परमेश्वर ने मनुष्यजाति को अपनी पवित्र, राजकीय वाटिका में रखना शुरू किया। लेकिन परमेश्वर ने आदम को उत्पत्ति 1:28 में पूरी पृथ्वी को भरने, उस पर अधिकार करने और उसे अपने वश में करने के लिए भी बुलाया। पहले अति प्राचीन सप्ताह के अंत में सृष्टि "बहुत अच्छी" थी, लेकिन केवल इस अर्थ में कि सब कुछ तैयार था — परमेश्वर की सृष्टि के लिए उसके बड़े राज्य के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए तैयार।

जैसा कि हम उत्पत्ति 2:8-9 में पढ़ते हैं :

> यहोवा परमेश्वर ने पूर्व की ओर अदन में एक वाटिका लगाई... और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब भाँति के वृक्ष, जो देखने में मनोहर और जिनके फल खाने में अच्छे हैं, उगाए। और वाटिका के बीच में जीवन के वृक्ष को और भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष को भी लगाया (उत्पत्ति 2:8-9)।

इसके बारे में इस प्रकार सोचें : उत्पत्ति के शुरुआती अध्यायों में, परमेश्वर ने संसार को ऐसे आकार दिया जैसे एक कलाकार अक्सर एक पूरे दृश्य को चित्रित करने से पहले अपने चित्रफलक पर पेंसिल से उसकी रूपरेखा बनाते हैं। परमेश्वर ने संसार के लिए आवश्यक मूलभूत व्यवस्था को स्थापित किया, ताकि वह एक दिन वैसा बन सके जैसी उसने योजना बनाई थी, लेकिन उसने तुरंत संसार के पूरे चित्रफलक को नहीं रंगा।

इसके बजाय, अपनी गहरी बुद्धि में, परमेश्वर ने पृथ्वी के केवल एक हिस्से को खूबसूरत रंगों से रंगा। उन्होंने इसे पृथ्वी के केंद्रबिंदु के रूप में सुशोभित किया। पृथ्वी के इस क्षेत्र को अदन कहा जाता था। अदन के भीतर एक वाटिका थी — एक अद्भुत सुंदर स्थान, एक भव्य पवित्र स्वर्गलोक जो स्वर्ग के राजा की विशेष उपस्थिति के लिए उपयुक्त था। यह इतना पवित्र था, बाकी सृष्टि से इतना अलग था कि परमेश्वर वहाँ चलता-फिरता था और अपनी दृश्यमान महिमा को प्रकट करता था। लेकिन वाटिका चाहे जितनी भी भव्य थी, इतिहास के लिए परमेश्वर का लक्ष्य यह नहीं था कि पृथ्वी इसी स्थिति में रहे। बल्कि, संपूर्ण पृथ्वी को अदन की पवित्र वाटिका के समान बनना था ताकि एक दिन, उसकी दृश्य महिमा पूरी सृष्टि में भर जाए। पहले सप्ताह के अंत में पृथ्वी की स्थिति उन सब बातों के लिए केवल शुरुआती बिंदु थी जो पुराना नियम परमेश्वर के विकासशील, ऐतिहासिक राज्य के बारे में सिखाता है।

> अतः सृष्टि का हमारा सांस्कृतिक आदेश भंडारी बनना है, उसके साथ संबंध में परमेश्वर के लोग बनना है, उस वाटिका रूपी पवित्र स्थान की सीमाओं का विस्तार करना है, और हमें आराधना, भक्ति, आज्ञाकारिता में ऐसा करना है, उसकी सृष्टि के सभी संसाधनों को खोजते हुए करना है, और वह निस्संदेह, अंततः नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में भी किया जाएगा।
>
> — डॉ. स्टीफन जे. वेलम

अब तक, हमने देखा है कि अति प्राचीनकाल की शुरुआत परमेश्वर द्वारा संसार को अपने विकासशील, ऐतिहासिक राज्य के स्थान के रूप में तैयार करने के साथ हुई। अब हमें बाइबल के विवरण के दूसरे महत्वपूर्ण पहलू की ओर मुड़ना चाहिए : संसार के इतिहास के इस चरण में परमेश्वर द्वारा लोगों के लिए निर्धारित की गई भूमिका।

लोग

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि पवित्रशास्त्र मनुष्यों के बारे में कितनी बात करता हैं? बाइबल का एक भी ऐसा पृष्ठ ढूंढना लगभग असंभव है जो किसी न किसी रूप में लोगों के बारे में बात न करता हो। और सबसे पहले, यह अजीब लग सकता है क्योंकि हम आम तौर पर बाइबल को इस प्रकाशन के रूप में देखते हैं कि परमेश्वर कौन है और उसने क्या किया है। और यह निश्चित रूप से सच है। लेकिन बाइबल के इतिहास का विवरण उस विशेष, महत्वपूर्ण भूमिका पर भी जोर देता है जो मनुष्य सृष्टि के लिए परमेश्वर की योजना में निभाते हैं। निस्संदेह, मनुष्य परमेश्वर की कृपा के बिना कुछ भी अच्छा नहीं कर सकता। और इस कारण से, एक संपूर्ण भाव में, सारी महिमा केवल परमेश्वर की है। फिर भी, पवित्रशास्त्र यह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर ने अपने राज्य के उद्देश्यों को मुख्य रूप से मनुष्यजाति के द्वारा पूरा करने का निश्चय किया है। यही कारण है कि पवित्रशास्त्र में लोगों के बारे में कहने के लिए बहुत कुछ है। वह बताता है कि क्यों नया नियम यीशु के मनुष्यत्व पर जोर देता है, वह एकमात्र सिद्ध, धर्मी मनुष्य है जो उन उद्देश्यों को पूरा करता है जिनके लिए मनुष्यों को पहले पहल रचा गया था।

मनुष्यजाति के लिए यह विशेष भूमिका उत्पत्ति 2:18 में स्पष्ट हो जाती है जहाँ परमेश्वर ने अदन की वाटिका में आदम के बारे में यह कहा :

> फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, "आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उस से मेल खाए" (उत्पत्ति 2:18)।

इससे पहले, उत्पत्ति 1 में, परमेश्वर ने निष्कर्ष निकाला था कि सृष्टि "बहुत अच्छी" है। लेकिन उसे अपनी राजकीय वाटिका में कुछ ऐसा भी मिला जो "अच्छा नहीं" था — आदम की कोई पत्नी नहीं थी। लेकिन यह अच्छा क्यों नहीं था? ऐसा इसलिए था क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्यजाति को एक ऐसे उद्देश्य के लिए बनाया था जिसे एक व्यक्ति अकेले पूरा नहीं कर सकता था। पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के विकास में मनुष्यजाति की भूमिका निभाने के लिए कई लोगों की आवश्यकता थी।

लोगों के लिए इस महत्वपूर्ण भूमिका का दो तरह से वर्णन किया गया है। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अपने याजकों और उप-शासकों या राजकीय प्रतिनिधियों के रूप में सेवा करने के लिए बनाया। पवित्रशास्त्र में ये भूमिकाएँ आपस में जुड़ी हुई हैं, लेकिन हम इन्हें अलग-अलग करके देखेंगे, जिसकी शुरुआत परमेश्वर के याजकों के रूप में मनुष्यों की सेवा से होगी।

याजक

एक ओर, आदम — और बाद में उसके साथ हव्वा — को परमेश्वर के याजक के रूप में सेवा करने का काम दिया गया। उसे आराधना के कामों के साथ परमेश्वर का आदर करने के लिए बुलाया गया था। हमने पहले देखा था कि दानिय्येल के दर्शन में अनगिनत प्राणी उसके स्वर्गीय न्यायालय में परमेश्वर के सामने सेवा करते हैं। और आदम और हव्वा को पृथ्वी पर यही करने के लिए बुलाया गया था। हम उत्पत्ति 2:15 में मनुष्यजाति के लिए इस याजकीय भूमिका को देख सकते हैं जहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे (उत्पत्ति 2:15)।

पहली नज़र में, हम सोच सकते हैं कि यह अनुच्छेद दर्शाता है कि परमेश्वर ने आदम को केवल एक माली बनने के लिए बुलाया था। लेकिन उसका कार्य इससे कहीं अधिक था क्योंकि अदन की वाटिका परमेश्वर के लिए एक पवित्र, राजकीय वाटिका थी। यह अभिव्यक्ति "उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे" असामान्य है और इसका मूसा और प्राचीन इस्राएल के लिए विशेष महत्व था। कई स्थानों पर, मिलापवाले तंबू में परमेश्वर की महिमा के सामने याजकों और लेवियों के काम का वर्णन करने

के लिए पंचग्रंथ में समान अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया गया है। उदाहरण के लिए, गिनती 3:8 में हम पढ़ते हैं :

> वे मिलापवाले तम्बू के कुल सामान की और इस्राएलियों की सौंपी हुई वस्तुओं की भी रक्षा करें, इस प्रकार वे तम्बू की सेवा करें (गिनती 3:8)।

वाटिका में आदम और हव्वा की भूमिका का विवरण परमेश्वर के प्रति याजकीय सेवा में लेवियों की भूमिका के इस विवरण को दर्शाता है।

आदम और हव्वा को परमेश्वर की पवित्र, राजकीय वाटिका, अर्थात् पृथ्वी पर ईश्वरीय राजा की महिमा के स्थान में रखा गया था। वहाँ उन्होंने वैसे परमेश्वर की सेवा की जैसे बाद में याजकों और लेवियों ने मिलापवाले तंबू में सेवा की थी, जहाँ परमेश्वर की महिमा इस्राएल के सामने प्रकट हुई। आदम और हव्वा को अपने सभी कार्य पवित्र याजकीय सेवा के रूप में करने के लिए बुलाया गया था — ऐसे कार्यों के रूप में जिन्हें आराधना में महान ईश्वरीय राजा को आदर देने के लिए रचा गया था।

दूसरी ओर, पृथ्वी पर रहनेवाले पहले लोगों को न केवल परमेश्वर के याजकों के रूप में सेवा करनी थी। बल्कि परमेश्वर ने उन्हें अपने उप-शासकों, अपने राजकीय प्रतिनिधियों के रूप में सेवा करने के लिए भी बुलाया। वास्तव में, आदम और हव्वा परमेश्वर के *राजकीय* याजक थे।

उप-शासक

हम आदम और हव्वा का ऐसा विवरण उत्पत्ति 1:26 में पाते हैं जहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> परमेश्वर ने कहा, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ। और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें" (उत्पत्ति 1:26)।

पवित्रशास्त्र से परिचित हर कोई जानता है कि पुराने और नए नियम में यह और कई अन्य अनुच्छेद मनुष्य को परमेश्वर के "स्वरूप" या "समानता" में कहते हैं। अतीत में, अधिकांश धर्मविज्ञानियों का मानना था कि इसका सीधा सा अर्थ है कि मनुष्य तर्कसंगत, नैतिक और धार्मिक प्राणी हैं। लेकिन, ये पारंपरिक मसीही दृष्टिकोण चाहे जितने भी सही हों, फिर भी उत्पत्ति 1 का केंद्र-बिंदु यह नहीं है।

परमेश्वर द्वारा मनुष्य को अपने स्वरूप और समानता में बुलाने के महत्व को समझना प्राचीन संसार में प्रचलित एक आम रीति को जानने में सहायता करता है। इस्राएल के बाहर, फ़िरौन, राजाओं और सम्राटों को अक्सर "स्वरूप," "समानता" और यहाँ तक कि उनके ईश्वरों के "पुत्र" भी कहा जाता था। उन्हें जीवित स्वरूप माना जाता था जो पृथ्वी पर उनके ईश्वरों के हितों का प्रतिनिधित्व करते थे। स्वर्ग के प्रतिनिधियों के रूप में, प्राचीन समाजों में राजाओं का विशेष कार्य स्वर्ग में अपने ईश्वरों की इच्छा को जानना और फिर पृथ्वी पर इस इच्छा को पूरा करने के लिए अपने राजकीय अधिकार का इस्तेमाल करना था। अतः इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यीशु ने अपने अनुयायियों से यह प्रार्थना करने के लिए कहा कि परमेश्वर की इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे ही पृथ्वी पर भी पूरी हो । यह उसका राजकीय कार्य था।

प्रेरितों के काम 7:22 में स्तिफनुस ने याद दिलाया कि मूसा ने मिस्र के न्यायालयों के तौर-तरीके सीखे थे। मूसा यह अच्छी तरह से जानता था कि मिस्र के फ़िरौन और अन्य राष्ट्रों के राजाओं को आम लोगों से अलग करने के लिए अक्सर उनके देवताओं के "स्वरूप", "समानताएँ" या "पुत्र" कहा जाता था। परन्तु पवित्र आत्मा की प्रेरणा के अधीन मूसा ने इस व्यापक झूठी धारणा का विरोध किया। आदि में, इस्राएल के सच्चे परमेश्वर ने वास्तव में घोषणा की थी कि *सब* मनुष्य — न केवल मुट्ठी भर राजा और सम्राट — परमेश्वर के स्वरूप, परमेश्वर के सच्चे राजकीय याजक थे। प्राचीन इस्राएलियों के लिए इस पर

विश्वास करना एक कठिन सबक रहा होगा। इन पूर्व दासों को स्वयं को और संसार में अपनी भूमिका को देखने के तरीके को बदलने की ज़रूरत थी। परमेश्वर ने प्रत्येक अन्य मनुष्य के साथ-साथ हर इस्राएली को अपने राजकीय, याजकीय प्रतिनिधियों के रूप में सेवा करने के लिए नियुक्त किया था।

और हमारे समय में, आधुनिक धर्मनिरपेक्ष संस्कृतियाँ अक्सर हमें सिखाती हैं कि मनुष्य आकस्मिक ऐतिहासिक परिस्थितियों के परिणाम से अधिक कुछ नहीं हैं। लेकिन बाइबल का वृत्तांत हमसे मांग करता है कि हम अपने बारे में और दूसरे लोगों के बारे में अपने दृष्टिकोण को उसके अनुरूप ढालें जो परमेश्वर ने सबसे पहले हमारे बारे में कहा है। हम सभी को परमेश्वर के याजकीय, राजकीय स्वरूप में बनाया गया है, हमें यह सुनिश्चित करने के लिए बुलाया गया है कि परमेश्वर की इच्छा पृथ्वी पर वैसे पूरी हो जैसे स्वर्ग में होती है।

उत्पत्ति 1:27-28 में हम पाते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्यजाति की सेवा के बारे में विस्तार से बताया जब उसने अपने स्वर्गीय सिंहासन से आशीष के वचन बोले :

> **तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। और परमेश्वर ने उनको आशीष दी, और उनसे कहा, "फूलो–फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो" (उत्पत्ति 1:27-28)।**

आदि से ही परमेश्वर ने हर मनुष्य को अपने याजकीय, राजकीय स्वरूप बनने और उसे पूरा करने के लिए बुलाया जिसे धर्मविज्ञानी अक्सर "सांस्कृतिक आदेश" कहते हैं।

जैसा कि हमने देखा, परमेश्वर ने सृष्टि में व्यवस्था और सुंदरता को स्थापित किया, और उसने मनुष्यजाति को राजकीय याजकों के रूप में सेवा करने के लिए अपनी अद्भुत, पवित्र वाटिका में रखा। स्वर्ग के महान राजा ने मनुष्यजाति को अपने राज्य के विस्तार के साधन के रूप में नियुक्त किया। मनुष्यों को फूलना-फलना था, फैलना था, और पूरी पृथ्वी को परमेश्वर की वाटिका के समान बनाना था ताकि वे परमेश्वर की इच्छा को पृथ्वी पर ला सकें और पूरे संसार में उसकी सेवा कर सकें। पूरे संसार में परमेश्वर के राज्य का विस्तार करना ही वह उद्देश्य था जिसके लिए परमेश्वर ने मनुष्यों को पृथ्वी पर रखा था।

अब, मुझे लगता है कि हमें यह स्वीकार करना होगा कि आधुनिक लोगों के रूप में हम अपने अस्तित्व के उद्देश्य के बारे में इन रूपों से शायद ही कभी सोचते हैं। जब कोई आपसे पूछता है, "आप क्या करते हैं?" तो आपने कितनी बार ऐसा उत्तर दिया है, "मैं फलता-फूलता हूँ। मैं बढ़ता हूँ मैं पृथ्वी को भरता हूँ, मैं उसे अपने वश में करता हूँ और परमेश्वर की ओर से उस पर अधिकार रखता हूँ"? ये अवधारणाएँ मसीह के कई अनुयायियों के लिए इतनी अपरिचित हैं कि हम अपने जीवन के साथ जो करते हैं उसका इन रूपों में वर्णन करने के बारे में शायद ही कभी सोचते हैं । इसलिए, यदि आप स्वयं को अपने जीवन के उद्देश्य के बारे में असमंजस में पाते हैं तो चकित न हों। परमेश्वर ने मनुष्यों के बारे में जो सबसे पहले कहा, हमें उसे हृदय में बसाने के द्वारा जीवन में अपना उद्देश्य ढूँढ़ने की ज़रूरत है। हमें परमेश्वर के राजकीय याजक बनने के लिए रचा गया था। हमें यह सुनिश्चित करने के लिए रचा गया था कि परमेश्वर का शासन पृथ्वी के छोर तक फैल जाए ताकि एक दिन पूरी सृष्टि परमेश्वर की दृश्यमान महिमा से और उसकी अंतहीन स्तुति से भर जाए।

हमने देखा है कि अति प्राचीन इतिहास में परमेश्वर ने पृथ्वी को अपने राज्य के स्थान के रूप में, और लोगों को अपने राज्य के सेवक के रूप में स्थापित किया। अब हमें इस समय के दौरान परमेश्वर के बढ़ते हुए, पृथ्वी पर के राज्य की प्रगति का संक्षेप में वर्णन करना चाहिए।

प्रगति

यदि आदम और हव्वा पाप में नहीं गिरे होते, तो परमेश्वर के स्वरूप में मनुष्यजाति की सेवा का मार्ग एक सीधा विषय होता। आदम और हव्वा के संतान उत्पन्न होती, और आगे-आगे उनकी संतानों के भी अपनी-अपनी संताने उत्पन्न होतीं। और इन बड़ी संख्या में परमेश्वर के याजकीय, राजकीय स्वरूप मिलकर पृथ्वी को भर देते, उसे अपने वश में कर लेते और परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार उस पर अधिकार कर लेते। लेकिन जैसा कि हम सब अच्छी तरह से जानते हैं, बातें इस दिशा में आगे नहीं बढीं। पाप ने शीघ्र ही मनुष्यजाति के सीधे मार्ग को समस्या से भरे लंबे, टेढ़े-मेढ़े रास्ते में बदल दिया। फिर भी, अति प्राचीन इतिहास की शुरुआत में इन परेशानियों के बावजूद, परमेश्वर ने मनुष्यजाति को आश्वस्त किया कि उनके लिए उसका उद्देश्य विफल नहीं होगा।

अति प्राचीनकाल के दौरान परमेश्वर के राज्य की प्रगति के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है, लेकिन हम इसे तीन चरणों में सारगर्भित करेंगे। सबसे पहले, हम उस वैश्विक राजद्रोह के बारे में बात करेंगे जो वहाँ हुआ था। दूसरा, हम देखेंगे कि कैसे मनुष्यजाति का भ्रष्टाचार बढ़ा और वह कठोर ईश्वरीय दंड का कारण बना। लेकिन तीसरा, हम पाएँगे कि परमेश्वर ने एक दीर्घकालिक रणनीति स्थापित की जो मनुष्यजाति को उसके राज्य के उद्देश्यों को पूरा करने में योग्य बनाएगी। आइए सबसे पहले उस वैश्विक राजद्रोह को देखें जो ईश्वरीय राजा के विरुद्ध हुआ।

वैश्विक राजद्रोह

अपने ईश्वरीय राजा की आज्ञा को विश्वासयोग्यता से पूरा करने के बजाय, आदम और हव्वा ने शैतान की परीक्षा के सामने घुटने टेक दिए और उन्होंने प्रतिबंधित फल खाकर विद्रोह किया। इस प्रकार, अदन की वाटिका को पृथ्वी की छोर तक फैलाने के बजाय, उन्हें एक शाप के अधीन जीवन बिताने के लिए वाटिका से बाहर निकाल दिया गया। फिर भी, राज्य का निर्माण करनेवालों के रूप में मनुष्यजाति की जिम्मेदारियाँ समाप्त नहीं हुईं। आदम और हव्वा और उनके वंशजों को अब भी बढ़ना था और परमेश्वर की सेवा में पृथ्वी पर अधिकार करना था। फिर भी, परमेश्वर ने मनुष्यजाति और पृथ्वी को शाप दिया जिससे बढ़ना और अधिकार रखना पीड़ादायक, कठिन और निराशाजनक हो जाए। बढ़ने के संबंध में, उत्पत्ति 3:16 में परमेश्वर ने हव्वा से ये शब्द कहे :

> मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊँगा; तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी (उत्पत्ति 3:16)।

अधिकार रखने के संबंध में, पद 17 में परमेश्वर ने आदम को इस प्रकार चेतावनी दी :

> भूमि तेरे कारण शापित है। तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा (उत्पत्ति 3:17)।

दुखद बात है कि परमेश्वर के याजकीय, राजकीय स्वरूपों को एक शत्रुतापूर्ण संसार में रहने और उस मिशन में पीड़ा और निरर्थकता का अनुभव करने के लिए बाध्य किया गया जिस पर परमेश्वर ने उन्हें रखा था।

अति प्राचीन काल के दौरान परमेश्वर के राज्य की प्रगति का विवरण आदम और हव्वा के वैश्विक राजद्रोह के साथ शुरू हुआ। लेकिन उनके वंशजों ने भ्रष्टाचार का रास्ता अपनाया जिसके कारण अंत में परमेश्वर की ओर से कठोर दंड आया।

भ्रष्टता और दंड

उत्पत्ति की पुस्तक के अनुसार, जब आदम और हव्वा पाप में पड़ गए तो यह सच नहीं रह गया कि उनके सारे वंशज परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होंगे। वास्तव में, उनमें से कोई भी परमेश्वर की

छुटकारा देनेवाली दया के बिना परमेश्वर के विश्वासयोग्य स्वरूप के रूप में सेवा नहीं कर सकता था। अधिकांश मनुष्यजाति परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करती रही। आदम और हव्वा के पहले पुत्र कैन ने अपने भाई हाबिल की हत्या कर दी। और उत्पत्ति 4 में कैन की वंशावली हमें बताती है कि जैसे-जैसे कैन का परिवार बढ़ता गया, उनका विद्रोह और अधिक होता गया। परमेश्वर के राजकीय याजकों के रूप में सेवा करने के बजाय, कैन के वंशजों ने परमेश्वर के शासन के विरोध में स्वयं को ऊँचा उठाया और पृथ्वी को अन्य मनुष्यों के विरुद्ध हिंसा से भर दिया। और जैसे-जैसे समय बीतता गया, मनुष्यजाति की हिंसा के कारण परमेश्वर को वैश्विक जल-प्रलय के साथ पृथ्वी को साफ़ करना पड़ा। जैसा कि हम उत्पत्ति 6:5-7 में पढ़ते हैं :

> यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह निरन्तर बुरा ही होता है। और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ। तब यहोवा ने कहा, "मैं मनुष्य को जिसकी मैं ने सृष्टि की है पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूँगा; क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगनेवाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, सब को मिटा दूँगा, क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूँ" (उत्पत्ति 6:5-7)।

अति प्राचीन इतिहास के दौरान परमेश्वर के राज्य की प्रगति के विवरण में केवल मनुष्यजाति का वैश्विक राजद्रोह और उनकी भ्रष्टता और उसके बाद आनेवाला दंड ही शामिल नहीं होता। इससे यह भी पता चलता है कि परमेश्वर ने एक दीर्घकालिक रणनीति स्थापित की जिसके फलस्वरूप अंततः उसका राज्य पूरे संसार में फैल जाएगा। वास्तव में, परमेश्वर ने समय के साथ लोगों को अपने लिए छुड़ाने और उनके द्वारा अपने राज्य का निर्माण करने का निश्चय किया।

दीर्घावधि की रणनीति

इस दीर्घकालिक रणनीति का पहला संकेत उत्पत्ति 3:15 में प्रस्तुत किया गया। यहाँ, परमेश्वर ने उस साँप को शाप दिया जिसने आदम और हव्वा के पाप को इन शब्दों से उकसाया था :

> मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा (उत्पत्ति 3:15)।

इस अनुच्छेद में, परमेश्वर ने साँप से कहा कि मनुष्यजाति दो समूहों में विभाजित हो जाएगी : शैतान की संतान, या "वंश" जैसा कि अक्सर अनुवाद किया जाता है — वे मनुष्य जो स्वयं को शैतान के विद्रोही तरीकों के साथ जोड़ते हैं — और हव्वा की संतान, वे मनुष्य जो विश्वासयोग्यता से परमेश्वर की सेवा करना चाहते हैं। लोगों के इन दो समूहों की पूरे इतिहास में एक-दूसरे से शत्रुता रहेगी। परमेश्वर ने यह भी प्रतिज्ञा की कि एक दिन हव्वा का वंश — छुड़ाई गई मनुष्यजाति — साँप के सिर को कुचल देगा, और उस पर विजय प्राप्त करेगा जो उन्हें वैश्विक राजद्रोह में ले गया था। यह प्रतिज्ञा अंततः मसीह द्वारा पूरी की गई। सुनिए किस प्रकार रोमियों 16:20 में पौलुस ने मसीह के अनुयायियों को आश्वस्त किया :

> शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पाँवों से शीघ्र कुचलवा देगा (रोमियों 16:20)।

परमेश्वर के छुड़ाए गए, विश्वासयोग्य स्वरूपों के लिए बुराई पर विजय की आशा पूरे इतिहास में फैली हुई है और यह परमेश्वर के सिद्ध स्वरूप, अर्थात् मसीह में अपनी पूर्णता तक पहुँचेगी।

अपने राज्य के लिए परमेश्वर की दीर्घकालिक रणनीति के कारण विश्वासयोग्य हाबिल के स्थान पर एक तीसरे पुत्र, शेत का जन्म हुआ। जैसा कि उत्पत्ति 5 की वंशावली हमें बताती है, शेत और उसके

वंशजों ने परमेश्वर का आदर किया और उसके राज्य को पूरी पृथ्वी पर फैलाने का प्रयास किया। और जब मानवीय हिंसा ने संसार को इतना भर दिया था कि परमेश्वर ने अधिकांश मनुष्यजाति को नष्ट कर दिया, तब भी शेत का एक वंशज — नूह — परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य और उसने परमेश्वर की दृष्टि में अनुग्रह पाया। नूह के दिनों की बड़ी जल-प्रलय के बाद, परमेश्वर ने अपने राज्य के प्रति मनुष्यजाति की सेवा की पूर्णता के लिए अपनी दीर्घकालिक रणनीति की पुष्टि की।

उत्पत्ति 8:21-22 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> मनुष्य के कारण मैं फिर कभी भूमि को शाप न दूँगा, यद्यपि मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है वह बुरा ही होता है; तौभी जैसा मैं ने सब जीवों को अब मारा है, वैसा उनको फिर कभी न मारूँगा। अब से जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने के समय, ठण्ड और तपन, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात, निरन्तर होते चले जाएँगे (उत्पत्ति 8:21-22)।

ध्यान दें कि कैसे परमेश्वर ने पहचाना कि उनके बचपन से ही सब मनुष्यों का झुकाव बुराई की ओर होता है। उसने स्वीकार किया कि पाप उसके पतित स्वरूपों पर प्रहार करता रहेगा। इसलिए, मेघधनुष के चिह्न के साथ परमेश्वर ने घोषणा की कि जब तक पृथ्वी बनी रहेगी वह "बोने और काटने के समय, ठण्ड और तपन, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात" के प्राकृतिक क्रम को स्थिर बनाए रखेगा। लेकिन परमेश्वर ने जल-प्रलय के बाद प्रकृति के लिए यह सुरक्षित व्यवस्था क्यों स्थापित की? उसका कारण उन शब्दों में स्पष्ट हो जाता है जो तुरंत उत्पत्ति 9:1 में आते हैं :

> फिर परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों को आशीष दी और उनसे कहा, "फूलो–फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी में भर जाओ" (उत्पत्ति 9:1)

जैसा कि यह पद हमें बताता है, परमेश्वर ने अपने राज्य के उद्देश्यों की पूर्णता के लिए मनुष्यों के लिए अपनी बुलाहट का नवीनीकरण किया। उन्होंने प्रकृति की स्थिरता को स्थापित किया ताकि परमेश्वर का स्वरूप उसके राज्य के लिए अपनी मूल सेवा पूरा कर सके।

> जब परमेश्वर ने मनुष्यजाति की रचना की — उत्पत्ति 1 में — और परमेश्वर ने हमें अपने स्वरूप में बनाया, नर और नारी करके अपने स्वरूप में बनाया, और कहा, "फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ।" और यह सिर्फ पाप के प्रवेश से पहले ही नहीं है... बल्कि उसके बाद भी जब उसने पृथ्वी को जल-प्रलय से नष्ट कर दिया, और नूह और उसकी पत्नी और उनके पुत्र और उनकी पत्नियाँ, वे सब जहाज से बाहर निकल आए, तो उसने एक बार फिर से यह कहा, "फूलो-फलो और बढ़ो और पृथ्वी में भर जाओ।" परमेश्वर ने हमें यह पृथ्वी हमारी भलाई और अपनी महिमा के लिए दी है।
>
> — डॉ. रिक बोयड

इस बिंदु से आगे, पवित्रशास्त्र यह प्रकट करता है कि कैसे परमेश्वर के राज्य की ओर मनुष्यजाति की सेवा का मार्ग सीधा या बाधारहित नहीं था। परमेश्वर के लोगों ने कड़े विरोध का सामना किया। वे असफल रहे और उन्होंने कई असफलताओं का सामना किया। फिर भी, परमेश्वर ने प्रकृति में दीर्घकालिक स्थिरता स्थापित की ताकि एक दिन परमेश्वर का स्वरूप उसके राज्य को पृथ्वी की छोर तक फैलाने के कार्य को पूरा करे।

अब जब हमने देख लिया है कि पवित्रशास्त्र अति प्राचीन इतिहास के दौरान परमेश्वर के राज्य के बारे में क्या सिखाता है, तो हम पुराने नियम में राज्य के इतिहास के अगले प्रमुख चरण में जाने के लिए

तैयार हैं, अर्थात् उस अवधि की ओर जिसमें परमेश्वर ने अपने राज्य के चुने हुए लोगों के रूप में विशेष रूप से इस्राएल जाति के साथ व्यवहार किया था।

इस्राएल जाति

इस सच्चाई को नजरअंदाज करना मुश्किल है कि इस्राएल जाति बाइबल के इतिहास में एक केंद्रीय भूमिका निभाती है। लेकिन क्यों? पवित्रशास्त्र इस्राएल के लोगों पर ध्यान केंद्रित करता है क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें उस सेवा में संपूर्ण मनुष्यजाति की अगुवाई करने के लिए चुना था जो उसने आरंभ से ही अपने स्वरूपों के लिए निर्धारित की थी। इस्राएली स्त्री के वंश, राजकीय याजक, उसकी निज प्रजा, जातियों के बीच उसका पहलौठा थे। और इस तरह, उन्हें संख्या में बढ़ना था और परमेश्वर के राज्य की सेवा में पृथ्वी पर अधिकार रखना था। अब इस्राएली बार-बार परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होने में विफल रहे, और परमेश्वर ने उन्हें कठोर दंड दिया, लेकिन परमेश्वर ने इस्राएल के लिए इस भूमिका को कभी निरस्त नहीं किया। जैसा कि हम देखने वाले हैं, पूरे पवित्रशास्त्र में परमेश्वर इस्राएल के प्रति इसमें समर्पित रहा कि इस्राएल सब जातियों को उसकी सेवा में लेकर आए।

यह देखने के लिए कि इस्राएल जाति के इतिहास में परमेश्वर का राज्य कैसे प्रकट हुआ, हम फिर से तीन विषयों पर चर्चा करेंगे। सबसे पहले, हम राज्य के स्थान या जगह का पता लगाएँगे। दूसरा, हम इस्राएल जाति में राज्य के लोगों को देखेंगे। और तीसरा, हम इस्राएल में राज्य की प्रगति की रूपरेखा बनाएँगे। आइए सबसे पहले परमेश्वर के राज्य के स्थान को देखें।

स्थान

जब परमेश्वर ने पहले-पहल आदम और हव्वा को पृथ्वी पर रखा, तो उसने उन्हें एक विशेष स्थान — अदन की वाटिका — में रखा। लेकिन उसने उन्हें पूरे संसार में परमेश्वर की इच्छा को स्थापित करने के द्वारा उसके स्वरूपों के रूप में सेवा करने के लिए भी नियुक्त किया। अब जैसा कि हम देखने वाले हैं, जब परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंशजों को चुना, तो उसने उन्हें एक बार फिर से अदन के क्षेत्र में केंद्रित रहने और वहाँ से मनुष्यजाति की मूल आज्ञा को पूरा करने के लिए बुलाया।

सुनिए किस प्रकार उत्पत्ति 12:1-3 में वर्णन किया गया है जब परमेश्वर ने पहले-पहल इस्राएल के पिता अब्राहम को अपना विशेष सेवक बनने के लिए बुलाया था। परमेश्वर ने कहा :

> "अपने देश, और अपने कुटुम्बियों, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम महान् करूँगा, और तू आशीष का मूल होगा। जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे" (उत्पत्ति 12:1-3)।

इस अनुच्छेद के भौगोलिक केंद्र पर ध्यान दें। परमेश्वर ने अब्राहम को मेसोपोटामिया में अपने पिता की मातृभूमि को छोड़कर उस देश में जाने के लिए बुलाया जिसे अब्राहम ने अभी तक देखा भी नहीं था।

परमेश्वर अब्राहम को मेसोपोटामिया के ऊर से हारान तक ले गया। और बाद में, परमेश्वर ने अब्राहम को हारान से कनान देश की ओर बुलाया, वह देश जिसे हम अक्सर "प्रतिज्ञा का देश" कहते हैं। जब अब्राहम कनान पहुंचा, तो परमेश्वर ने पुष्टि की कि उसके वंशज अपनी स्थायी मातृभूमि के रूप में उस

स्थान पर अधिकार कर लेंगे। और उस समय से, प्रतिज्ञा का देश इस्राएल के राज्य की सेवा के लिए मंच बन गया।

प्रतिज्ञा के देश की ओर अब्राहम की बुलाहट हमें कम से कम दो रूपों में इस्राएल के इतिहास में परमेश्वर के राज्य के स्थान को समझने में मदद करती है। सबसे पहले, परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंशजों को अपने राज्य के मूल भौगोलिक केंद्र में उसकी सेवा करने के लिए बुलाया। दूसरा, परमेश्वर ने इस्राएल को प्रतिज्ञा के देश की सीमाओं से परे अपने राज्य का भौगोलिक विस्तार करने के लिए बुलाया। आइए इस विचार पर चर्चा करें कि परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंशजों को पृथ्वी पर उसके राज्य के मूल केंद्र में उसकी सेवा करने के लिए बुलाया था।

मूल केंद्र

कुछ क्षण पहले, हमने देखा था कि परमेश्वर के पृथ्वी पर के राज्य का मूल केंद्रबिंदु अदन की भूमि और उसके भीतर की पवित्र वाटिका थी। दुखद रूप से, बाइबल के कई व्याख्याकारों ने गलत रूप से यह मान लिया है कि अदन फारस की खाड़ी के निकट निचले मेसोपोटामिया में कहीं था। हम निश्चित रूप से नहीं जानते कि कितने क्षेत्र को अदन की भूमि माना गया था। यह उस सीमा तक फैली हो सकती है जिसे अब हम उपजाऊ अर्द्धचंद्र कहते हैं। लेकिन उत्पत्ति की पुस्तक स्वयं उस भूमि और अदन की वाटिका को उस भूमि के साथ निकटता से जोड़ती है जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम से की थी।

यह भौगोलिक केंद्र उत्पत्ति 2:10-14 में स्पष्ट हो जाता है जहाँ परमेश्वर ने अदन की सीमाओं का वर्णन किया है :

> उस वाटिका को सींचने के लिये एक महानदी अदन से निकली और वहाँ से आगे बहकर चार धाराओं में बँट गई। पहली धारा का नाम पीशोन है; यह वही है जो हवीला नाम के सारे देश को घेरे हुए है ... दूसरी नदी का नाम गीहोन है; यह वही है जो कूश के सारे देश को घेरे हुए है। और तीसरी नदी का नाम हिद्देकेल है... और चौथी नदी का नाम फरात है (उत्पत्ति 2:10-14)।

यहाँ ध्यान दें कि चार अति प्राचीन नदियाँ अदन से जुड़ी हुई हैं। पहली दो पीशोन और गीहोन हैं। विद्वान आज भी इस बात पर तर्क-वितर्क करते हैं कि ये नदियाँ कहाँ स्थित थीं। लेकिन यहाँ, वे प्रतिज्ञा के देश के दक्षिण-पश्चिम में हवीला और कूश की भूमि से जुड़ी हुई हैं। दूसरी दो, हिद्देकेल और फरात, आधुनिक सीरिया के पहाड़ी क्षेत्रों से पूर्व की ओर बहती हैं। अदन की नदियों के स्थानों के बारे में इतना समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि, मोटे तौर पर, ये स्थान उन नदियों से संबंधित हैं जो बाद में उत्पत्ति की पुस्तक में उस देश से जुड़ी थीं जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम से की थी। उत्पत्ति 15:18 को सुनें और जिस प्रकार परमेश्वर ने उस देश का वर्णन किया जिसकी उसने अब्राहम और उसके वंशजों से प्रतिज्ञा की थी :

> मिस्र के महानद से लेकर परात नामक बड़े नद तक जितना देश है ... मैं ने तेरे वंश को दिया है (उत्पत्ति 15:18)।

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, नदियाँ इस्राएल के प्रतिज्ञा के देश की सीमाओं को चिह्नित करती हैं — मिस्र की नदी और परात नदी।

अधिकांश व्याख्याकार सही रूप से इस बात से सहमत हैं कि "मिस्र की नदी" नील नदी नहीं थी, बल्कि उत्तरपूर्वी मिस्र की कई नदियों या घाटियों में से एक थी। इसके अलावा, परात नदी, आधुनिक पश्चिमी सीरिया में ऊपरी परात, प्रतिज्ञा देश की उत्तरपूर्वी सीमा को चिह्नित करती है। बाद में बाइबल के इतिहास में, इन नदियों ने दाऊद और सुलैमान के शासनकाल के दौरान इस्राएल के देश की सीमा को चिह्नित किया।

जैसा कि हम देख सकते हैं, प्रतिज्ञा के देश की भौगोलिक सीमाएँ मोटे तौर पर अदन की भूमि की सीमाओं के लगभग समानांतर हैं। इसलिए, जैसा कि बाइबल के अन्य अनुच्छेदों से संकेत मिलता है, जब परमेश्वर ने अब्राहम को कनान में बुलाया, तो उसने उसे पृथ्वी के भूगोल के मूल केंद्रबिंदु, अदन में वापस बुलाया, जहाँ आदम और हव्वा ने पहली बार परमेश्वर के राज्य की सेवा करना शुरू किया।

अदन का स्थान न केवल हमें यह समझने में मदद करता है कि परमेश्वर ने पहले अब्राहम को बुलाया, और बाद में वह मूसा को परमेश्वर के राज्य के मूल भौगोलिक केंद्र में लेकर आया। यह इस बात को भी दर्शाता है कि इस्राएल का प्रतिज्ञा का देश इस्राएल के द्वारा पृथ्वी की छोर तक परमेश्वर के शासन के भौगोलिक विस्तार का शुरूआती बिंदु था।

विस्तार

उत्पत्ति 12:3 में अब्राहम से परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार, प्रतिज्ञा के देश पर अधिकार करना एक बहुत बड़े उद्देश्य के लिए था। जैसा कि परमेश्वर ने कहा :

> **जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे (उत्पत्ति 12:3)।**

इस अनुच्छेद में, परमेश्वर ने प्रत्यक्ष रूप से अब्राहम का ध्यान उस प्रभाव की ओर आकर्षित किया जो उसका और उसके वंशजों का सब जातियों पर पड़ेगा। परमेश्वर ने अब्राहम के प्रति उनकी प्रतिक्रिया के प्रत्युत्तर में अन्य जातियों को आशीर्वाद देने और शाप देने का वादा किया। लेकिन इस दोहरी प्रक्रिया के अंतिम परिणाम पर ध्यान दें। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि अब्राहम और उसके वंशज पृथ्वी के सब कुलों के लिए परमेश्वर की आशीषें लेकर आएँगे। यही कारण है कि रोमियों 4:13 में प्रेरित पौलुस ने अब्राहम और उसके वंश से परमेश्वर की प्रतिज्ञा को इस प्रकार सारगर्भित किया :

> **यह प्रतिज्ञा कि वह जगत का वारिस होगा... अब्राहम को [और] उसके वंश को... दी गई थी (रोमियों 4:13)।**

आदम और हव्वा को पूरी पृथ्वी को भरने और उस पर अधिकार रखने के लिए बुलाया गया था, लेकिन पाप ने मनुष्यजाति को परमेश्वर की सेवा करनेवालों और न करनेवालों के बीच विभाजित कर दिया था। परन्तु परमेश्वर ने पृथ्वी पर उन सभी जातियों पर अपनी आशीषें पहुँचाने के लिए अब्राहम और इस्राएल को चुना जो उसे ग्रहण करेंगी। और मसीह के अनुयायियों के रूप में, हम जानते हैं कि यह प्रतिज्ञा अब्राहम के सिद्ध पुत्र यीशु के द्वारा पूरी हुई।

इस्राएल के लोग अच्छी तरह से जानते थे कि उन्हें प्रतिज्ञा के देश से अधिक को प्राप्त करके परमेश्वर के उद्देश्यों की सेवा करने के लिए ठहराया गया था। मूसा के दिनों में, ढाई गोत्रों को यरदन नदी के पूर्व की भूमि पर अधिकार करने की अनुमति मिली। और दाऊद, सुलैमान और दाऊद के वंश के अन्य राजाओं ने इस्राएल की सीमाओं को उत्तर, पूर्व और दक्षिण तक बढ़ाया। जब इस्राएल को निर्वासन में भेज दिया गया, तब भी भविष्यवक्ताओं ने परमेश्वर के लोगों को आश्वस्त किया था कि न केवल वे प्रतिज्ञा के देश में लौट जाएँगे, बल्कि मसीहा एक दिन परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी की छोर तक फैलाने में उनकी अगुवाई करेगा।

पुराने नियम के इस्राएल के दिनों में परमेश्वर के राज्य के स्थान को ध्यान में रखते हुए, हम इस समय के दौरान राज्य के लोगों की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं।

लोग

हमने पहले देखा कि परमेश्वर ने मनुष्यों को अपने राजकीय याजकीय स्वरूपों में बनाकर उनका आदर किया। और उत्पत्ति 9:6 तथा याकूब 3:9 जैसे अनुच्छेद संकेत करते हैं कि आज भी मनुष्यों के पास वह आदर और जिम्मेदारी है कि वे परमेश्वर के स्वरूपों के रूप में उसके राज्य के उद्देश्यों की सेवा करें। फिर भी, अपने असीम ज्ञान में, परमेश्वर ने निर्धारित किया कि अब्राहम के वंशजों, अर्थात् इस्राएल के लोगों की पूरे संसार में परमेश्वर के शासन के प्रसार में अगुवाई करने में एक विशेष भूमिका होगी। इस्राएल का इतिहास जटिल है, लेकिन इस बात को सार में प्रस्तुत करना सहायक होगा कि कैसे परमेश्वर ने सुनिश्चित किया कि इस्राएल के लोग राज्य के इस मिशन को पूरा करेंगे।

हम इस्राएल के इतिहास में परमेश्वर के राज्य के लोगों से संबंधित तीन विषयों को देखेंगे: पहला, एक विशेष लोगों के रूप में इस्राएल का चयन; दूसरा, इस्राएल के लोगों का याजकों के राज्य में गठन; और तीसरा, इस्राएल की अगुवाई करने के लिए परमेश्वर द्वारा आधिकारिक याजकों और राजाओं को नियुक्त करना। सबसे पहले परमेश्वर के विशेष लोगों के रूप में इस्राएल के चयन पर विचार करें।

इस्राएल का चयन

जैसा कि हमने पहले देखा, आदम और हव्वा के पाप के बाद, मनुष्यजाति साँप के वंश — जो शैतान के उद्देश्यों को पूरा करते हैं; और स्त्री के वंश — जो परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करते हैं — के बीच विभाजित हो गई। उत्पत्ति 5 के अनुसार, आदम का तीसरा पुत्र, शेत, मनुष्यजाति की एक विश्वासयोग्य वंशावली का पिता बना, जिससे धर्मी नूह और उसके पुत्र और बहुएँ निकलीं। नूह के तीन पुत्र हुए : शेम, हाम और येपेत। परन्तु इन तीनों में से शेम और उसके वंशज परमेश्वर की दृष्टि में विशेष थे। उत्पत्ति की पुस्तक में यह सारी वंशावली संबंधी जानकारी परमेश्वर द्वारा इस्राएल का अपने चुने हुए लोगों के रूप में चयन करने की पृष्ठभूमि को समझाने के लिए तैयार की गई थी।

शेम की वंशावली से परमेश्वर ने एक पुरुष को स्त्री के वंश के रूप में सेवा करने के लिए चुना — वह था इस्राएल का कुलपिता, अब्राहम। उत्पत्ति के पुरुष-प्रधान इतिहास से पता चलता है कि अब्राहम का चमत्कारी रूप से एक पुत्र, इसहाक हुआ, जिसने इस चुनी हुई वंशावली को जारी रखा। तब इसहाक का पुत्र याकूब, जिसे इस्राएल के नाम से भी जाना जाता है, परमेश्वर का विशेष रूप से आदरयोग्य स्वरूप बना। और अंततः याकूब के बारह पुत्र हुए, यूसुफ और उसके भाई, और ये बारह पुत्र इस्राएल के बारह गोत्रों के पिता थे। मनुष्यों की सभी जातियों में इस्राएल के गोत्र परमेश्वर के विशेष लोग थे, वे उसके राज्य के लोग थे।

मूसा के दिनों में, परमेश्वर द्वारा अपने विशेष लोगों के रूप में इस्राएल के गोत्रों का चयन आगे बढ़ा। परमेश्वर ने इस्राएल के गोत्रों को मिस्र की गुलामी से बाहर निकाला और उन्हें एक राष्ट्र, याजकों के राज्य के रूप में गठित किया ताकि वह अपने राज्य को पूरे संसार में फैलाने के अपने लक्ष्य को पूरा कर सके।

याजकों का राज्य

निर्गमन 19:4-6 में परमेश्वर ने स्पष्ट शब्दों में इस्राएल के लिए इस उद्देश्य की घोषणा की। सीनै पर्वत पर उसने यह घोषणा की :

> तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या–क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूँ। इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे (निर्गमन 19:4-6)।

यहाँ हम देखते हैं कि इस्राएल को एक "पवित्र जाति" होना था — अर्थात् अन्य सब लोगों में से परमेश्वर के निज धन के रूप में विशेष, अलग, और प्रतिष्ठित। अपने पवित्र लोगों के रूप में, परमेश्वर ने पूरी इस्राएल जाति को "याजकों का राज्य" या, जैसा कि इसका अनुवाद किया जा सकता है, "राजकीय याजक" कहा।

> निर्गमन 19:6 और विशेष रूप से वाक्यांश "याजकों का राज्य" उत्पत्ति 1 में मनुष्यजाति, नर और नारी, की मूल बुलाहट की एक प्रकार की प्रतिध्वनि के रूप में कार्य करता है। मेरा मानना है कि उन्हें राजा बनने, सृष्टि पर राजा की भूमिका निभाने, सृष्टि पर शासन करने के लिए बुलाया गया है...इसके अलावा, तात्कालिक संदर्भ में, वाक्यांश "याजकों का राज्य" के ठीक बाद वाक्यांश "पवित्र जाति" है। इस्राएल को एक पवित्र जाति बनना है; याजकों को पवित्र होना है और परमेश्वर की पवित्रता को प्रकट करना है, और इस्राएल को तोराह के विभिन्न नियमों का पालन करने के द्वारा स्वयं को पवित्र करके भी परमेश्वर की पवित्रता को दर्शाना है।
>
> — डॉ. डगलस ग्रोप

इस्राएल का यह पद दर्शाता है कि इस्राएल को उस भूमिका को आगे बढ़ाने के लिए बुलाया गया था जो परमेश्वर के स्वरूप के रूप में आदम और हव्वा के पास शुरु से थी। इस्राएल के गोत्रों के याजकों के राज्य में विकास ने उन्हें पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने में सक्षम बनाया।

हालाँकि परमेश्वर द्वारा इस्राएल के चयन ने उसके लोगों को याजकों का राज्य बनने के विशेषाधिकार और जिम्मेदारियाँ दीं, पर हमें इस पर भी ध्यान देना चाहिए कि परमेश्वर ने कुछ इस्राएलियों को याजकों और राजाओं के विशेष कार्यों में अगुवाई करने के लिए बुलाया था।

याजक और राजा

हारून और उसके वंशज इस्राएल जाति को मिलापवाले तंबू में और फिर मंदिर में परमेश्वर की विशेष उपस्थिति में ले जाने के लिए इस्राएल के आधिकारिक याजक बने। उन्होंने इस्राएल की आराधना, बलिदान, प्रार्थनाओं और स्तुति में अगुवाई की। उन्होंने इस्राएल को परमेश्वर की व्यवस्था की शिक्षा भी दी। और शाऊल के समय के बाद, परमेश्वर ने दाऊद और उसके वंशजों को इस्राएल पर राजा के रूप में सेवा करने के लिए नियुक्त किया। दाऊद के राजवंश को न केवल परमेश्वर की सच्ची आराधना को संचालित करने के लिए, बल्कि इस्राएल और पृथ्वी के अन्य देशों में परमेश्वर की आज्ञाकारिता को लागू करने के लिए भी नियुक्त किया गया था। इस समय से, दाऊद के घराने को परमेश्वर के राज्य के विश्वव्यापी विस्तार की अगुवाई करनी थी। और निस्संदेह, यही कारण है कि नया नियम इस बात पर बहुत बल देता है कि दाऊद का पुत्र यीशु आज परमेश्वर के लोगों का महान महायाजक और उनका राजा है। वह अकेले ही वह सब पूरा करता है जिसके लिए इन कार्यभारों को तैयार किया गया था।

इस्राएल जाति में राज्य के स्थान और लोगों को ध्यान में रखते हुए, हमें इस्राएल जाति के द्वारा हुई राज्य की प्रगति का भी उल्लेख करना चाहिए।

प्रगति

पुराने नियम में इस्राएल की कहानी में सकारात्मक उपलब्धियाँ और घोर विफलताएँ दोनों शामिल हैं। इस्राएल की लगभग हर पीढ़ी ने किसी न किसी तरह से परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया और परमेश्वर के अस्थायी दंड के कारण कष्ट सहा। लेकिन परमेश्वर ने बार-बार इस्राएल से पश्चाताप कराया और उन्हें नया बनाया। फिर भी, पुराने नियम के अंत की ओर इस्राएल के पाप इतने बढ़ गए कि परमेश्वर ने प्रतिज्ञा

के देश से निर्वासन का एक बड़ा शाप उन पर डाला। सैकड़ों वर्षों तक, इस्राएल के पास कोई मातृभूमि नहीं थी, कोई याजकपद और मंदिर नहीं था, और न ही कोई दाऊद का पुत्र था जो परमेश्वर के राज्य को फैलाने में उनकी अगुवाई करे। इन भयानक परिस्थितियों के बावजूद भी परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं ने इस्राएल को आश्वस्त किया कि एक दिन दाऊद का एक महान पुत्र उठ खड़ा होगा और परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी की छोर तक फैलाने में इस्राएल की अगुवाई करेगा।

हमारे पास इतना ही समय है कि हम पुराने नियम के इस्राएल में परमेश्वर के राज्य की प्रगति में केवल तीन महत्वपूर्ण चरणों पर प्रकाश डालें : प्रतिज्ञा का समय; निर्गमन और विजय की घटनाएँ; और वह समय जब इस्राएल एक पूर्ण साम्राज्य बन गया। आइए सबसे पहले देखें कि परमेश्वर की प्रतिज्ञा की अवधि के दौरान क्या हुआ।

प्रतिज्ञा

जब हम प्रतिज्ञा की अवधि के बारे में बात करते हैं, तो हमारे मन में इस्राएल के कुलपतियों की पीढ़ियाँ होती हैं। अब्राहम, इसहाक, याकूब और याकूब के पुत्रों के समय में परमेश्वर ने इस्राएल जाति के भविष्य के बारे में कई प्रतिज्ञाएँ कीं। ये प्रतिज्ञाएँ दो बुनियादी श्रेणियों में विभाजित हैं जो अदन की वाटिका में परमेश्वर द्वारा अपने स्वरूप के सामने रखे गए मूल लक्ष्यों के अनुरूप हैं : इस्राएल की बढ़ोतरी की प्रतिज्ञाएँ और इस्राएल के अधिकार रखने की प्रतिज्ञाएँ।

सबसे पहले, जैसे परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बुलाया था कि पृथ्वी को अपने वंशजों से भर दें, वैसे ही परमेश्वर ने इस्राएल के कुलपतियों से प्रतिज्ञा की कि उनके वंशज एक दिन संख्या में बहुत अधिक बढ़ जाएँगे। उत्पत्ति 15:5 में अब्राहम से परमेश्वर की प्रतिज्ञा को सुनें :

> **"आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उनको गिन सकता है?" फिर उसने उससे कहा, "तेरा वंश ऐसा ही होगा" (उत्पत्ति 15:5)।**

यहाँ परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि अब्राहम और उसके वंशज आकाश के तारों के समान असंख्य होंगे। यही कारण है कि उत्पत्ति की पुस्तक सारा से अब्राहम के चमत्कारिक पुत्र इसहाक के जन्म पर बल देती है। इसी कारण बाइबल की कहानी इसहाक के पुत्र याकूब और याकूब के बारह पुत्रों पर इतना ध्यान देती है। इस्राएल की संख्या में वृद्धि इस्राएल के कुलपतियों के समय में एक केंद्रीय विषय है क्योंकि परमेश्वर ने इस्राएल को आदम और हव्वा को दी गई मूल आज्ञा को पूरा करने के लिए नियुक्त किया था।

दूसरा, कुलपतियों के बारे में बाइबल की कहानियाँ पृथ्वी पर इस्राएल के अधिकार पर भी ध्यान केंद्रित करती हैं। जैसे परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अदन की वाटिका में रखा था, वैसे ही परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि अब्राहम के वंशज कनान देश के अधिकारी होंगे। जैसा कि परमेश्वर ने उत्पत्ति 15:7 में अब्राहम से कहा :

> **मैं वही यहोवा हूँ जो तुझे कसदियों के ऊर नगर से बाहर ले आया, कि तुझ को इस देश का अधिकार दूँ (उत्पत्ति 15:7)।**

यही कारण है कि पवित्रशास्त्र दर्शाता है कि अब्राहम ने अपने परिवार के दफ़नाने के स्थान के रूप में कनान में भूमि का एक प्रतीकात्मक टुकड़ा खरीदा था। यह इस बात को भी स्पष्ट करता है कि क्यों परमेश्वर ने याकूब को अपने देश लौटने की आज्ञा दी, जबकि उसे अपने भाई एसाव से बड़े खतरे का सामना करना पड़ा था।

उत्पत्ति की पुस्तक यूसुफ द्वारा अपने भाइयों को यह आश्वासन देने के साथ समाप्त होती है कि वे मिस्र छोड़कर प्रतिज्ञा के देश में लौट जाएँगे। कुलपिताओं का समय ऐसा समय था जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि वह इस्राएल को एक बड़ी जाति बना देगा और प्रतिज्ञा के देश का अधिकार इस्राएल को देगा।

इस्राएल के कुलपतियों की प्रतिज्ञा की अवधि के बाद, परमेश्वर के राज्य की प्रगति निर्गमन और विजय के समय में जारी रही।

निर्गमन और विजय

आपको याद होगा कि जब मूसा और इस्राएली लाल समुद्र से होकर निकले, तो उन्होंने परमेश्वर की स्तुति का एक गीत गाया जो निर्गमन 15:1-18 में पाया जाता है। यह अनुच्छेद इस सच्चाई पर प्रकाश डालता है कि परमेश्वर ने पृथ्वी पर अपने राज्य का विस्तार करने के द्वारा आदम और हव्वा के मूल मिशन को आगे बढ़ाने के लिए इस्राएल को मिस्र से छुड़ाया था। निर्गमन 15:13 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> अपनी करुणा से तू ने अपनी छुड़ाई हुई प्रजा की अगुवाई की है, अपने बल से तू उसे अपने पवित्र निवास–स्थान को ले चला है (निर्गमन 15:13)।

ध्यान दें कि इस्राएलियों ने परमेश्वर की स्तुति की क्योंकि वह उनकी अपने "पवित्र निवास" या आवास की ओर अगुवाई कर रहा था।

जैसा कि हमने देखा है, अदन की तरह, प्रतिज्ञा के देश को पृथ्वी पर परमेश्वर की विशेष पवित्र उपस्थिति का केंद्र होना था। लेकिन इससे भी अधिक, हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि निर्गमन 15:13 में जिस शब्द का अनुवाद "अगुवाई" किया गया है — इब्रानी में नहल (נָהַל) — वह वचन के कई भागों में भेड़ों की अगुवाई करनेवाले चरवाहों के साथ जुड़ा हुआ है। सामान्य तौर पर प्राचीन मध्य पूर्व और बाइबल दोनों में, राजाओं की गतिविधियों का वर्णन करने के लिए ऐसे चरवाहा-संबंधी रूपक का इस्तेमाल किया जाता था। परमेश्वर ने अपने लोगों की उनके चरवाहे राजा के रूप में अपने पवित्र निवास की ओर अगुवाई की। फिर यह आश्चर्य की बात नहीं है कि परमेश्वर के राजत्व और राज्य का विषय निर्गमन 15:17-18 में स्पष्ट रूप से प्रकट होता है। लाल समुद्र में गाए गए गीत के अंत में हम यह पढ़ते हैं :

> तू उन्हें पहुँचाकर अपने निज भागवाले पहाड़ पर बसाएगा, यह वही स्थान है, हे यहोवा, जिसे तू ने अपने निवास के लिये बनाया, और वही पवित्रस्थान है जिसे, हे प्रभु, तू ने आप ही स्थिर किया है। यहोवा सदा सर्वदा राज्य करता रहेगा (निर्गमन 15:17-18)।

इन पदों के अनुसार, परमेश्वर इस्राएल को अपने पवित्र पर्वत की ओर ले गया, अर्थात् उस पवित्र स्थान की ओर जो बाद में यरूशलेम के रूप में प्रकट हुआ। और पहाड़ी का वह पवित्र स्थान परमेश्वर का "निवास" होगा — इब्रानी में यशव (יָשַׁב) — एक ऐसा शब्द जो अक्सर राजा के सिंहासन को दर्शाता है। इस अनुच्छेद में अन्य राजकीय अभिप्रायों के प्रकाश में, यह समझना सबसे अच्छा है कि यह पवित्र स्थान परमेश्वर के राजकीय सिंहासन का स्थान होगा। यही कारण है कि पद 18 तुरंत यह कहते हुए स्पष्ट राजकीय शब्दावली के साथ परमेश्वर की स्तुति करता है कि वहाँ से, "यहोवा सदा सर्वदा राज्य करता रहेगा।"

> इस्राएल ने परमेश्वर के उद्धार का अनुभव किया है और वह लाल समुद्र पर विजय का यह गीत गाता है : “यहोवा सदा सर्वदा राज्य करता रहेगा।” लेकिन यह एक अलग तरह का राजा है...और उन राजाओं के विपरीत जो दूर रहते हैं, जिन्हें आप केवल सिक्के पर छपे उनके चेहरे से देख सकते हैं — या आधुनिक संसार में, टीवी पर या समाचार पत्रों में उनकी तस्वीर से देख सकते हैं — इस्राएल का परमेश्वर, यहोवा, सच्चा राजा, परमेश्वर के लोगों को उसके पवित्र सीनै पर्वत पर आकर उसके साथ रहने का निमंत्रण देता है, और फिर और भी अधिक गहराई से एक माध्यम, मिलापवाला तंबू, बनाता है, जहाँ परमेश्वर सचमुच नीचे आता है और सदा-सर्वदा के लिए अपने लोगों के बीच वास करता है।

— डॉ. ब्रायन डी. रसेल

जब परमेश्वर ने इस्राएल जाति को एक चरवाहे की तरह प्रतिज्ञा के देश में ले जाकर इस्राएल के राजा के रूप में कार्य किया, तो उसने उन्हें पृथ्वी पर अपने राजकीय सिंहासन के आसपास स्थापित करने के लिए ऐसा किया। निर्गमन और प्रतिज्ञा के देश पर विजय का उद्देश्य पृथ्वी पर परमेश्वर के शासन, उसके राजत्व और उसके राज्य को फिर से स्थापित करना था।

प्रतिज्ञा, निर्गमन और विजय के समय में परमेश्वर के राज्य की प्रगति को देख लेने के बाद, हमें एक जाति के रूप में इस्राएल के इतिहास के तीसरे चरण को देखना चाहिए : साम्राज्य का चरण। दाऊद और सुलैमान के नेतृत्व में इस्राएल एक मानव राजा के साथ एक प्रामाणिक राज्य बन गया, जिन्होंने परमेश्वर के लोगों की आराधना और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में अगुवाई की।

साम्राज्य

दुःख की बात है कि 1 शमूएल 8 के आधार पर, कई सुसमाचारिक व्याख्याकारों ने गलत रूप से यह मान लिया है कि परमेश्वर ने कभी इस्राएल के लिए एक मानवीय राजा की योजना नहीं बनाई थी। लेकिन कुलपतियों के समय से, परमेश्वर ने प्रकट किया कि सही समय पर इस्राएल को परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने के लिए एक मानवीय राजा मिलेगा। परमेश्वर ने निर्धारित किया कि यह मानवीय राजा दाऊद का वंशज होगा। वह इस्राएल जाति का और अंततः पृथ्वी की सब जातियों की अगुवाई करेगा। और वह मनुष्यजाति के मूल उद्देश्य की पूर्णता में उनकी अगुवाई करेगा — परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी की छोर तक फैलाने में। और निस्संदेह, जैसा कि प्रत्येक मसीही जानता है यीशु दाऊद के वंश का पूर्ण धर्मी राजा है जो परमेश्वर के राज्य को जैसा वह स्वर्ग में है, पृथ्वी पर लेकर आएगा ।

दुःख की बात है कि इस्राएल के राजा परमेश्वर की इस बुलाहट को पूरा करने में असफल रहे। वास्तव में, 1 और 2 राजाओं की पुस्तकें यह स्पष्ट करती हैं कि इस्राएल के कई राजाओं ने, यहाँ तक कि दाऊद के घराने के भी, इस्राएल के लोगों को परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया। और ये विद्रोह अंततः निर्वासन की बड़ी समस्याओं का कारण बने। फिर भी, परमेश्वर के अनुग्रह से, दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान के शासनकाल ने पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य की एक महत्वपूर्ण प्रगति को प्रस्तुत किया। अपनी असफलताओं के बावजूद, उन्होंने परमेश्वर के राज्य के क्षेत्रों को सुरक्षित रखा और उनका विस्तार किया। और यरूशलेम में दाऊद के सिंहासन की स्थापना के साथ, परमेश्वर ने स्थायी राजवंश को स्थापित किया जो पृथ्वी पर उसके शासन का प्रतिनिधित्व करेगा और कई लोगों की परमेश्वर की सच्ची आराधना में अगुवाई करेगा। सुनिए किस प्रकार 1 इतिहास 29:23 दाऊद और सुलैमान के सिंहासन का वर्णन करता है :

> सुलैमान अपने पिता दाऊद के स्थान पर राजा होकर यहोवा के सिंहासन पर विराजने लगा (1 इतिहास 29:23)।

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, दाऊद का सिंहासन कोई साधारण सिंहासन नहीं था। यह "यहोवा का सिंहासन" था। जैसे आदम और हव्वा को मूल रूप से परमेश्वर के उप-शासकों के रूप में सेवा करने के लिए बुलाया गया था, वैसे ही दाऊद के राजकीय घराने ने परमेश्वर के राजकीय अधिकार का प्रतिनिधित्व किया।

इसके अलावा, दाऊद का घराना भी एक राजकीय याजक वर्ग भी था। दाऊद और सुलैमान ने याजकों और लेवियों की सेवाओं की व्यवस्था की और उनकी निगरानी की, जो परमेश्वर की आराधना में इस्राएल के लोगों की अगुवाई करते थे। और दाऊद ने सुलैमान को यरूशलेम में परमेश्वर के लिये एक मन्दिर बनाने के लिये तैयार किया। सुलैमान ने वाचा के सन्दूक को, जिसे दाऊद यरूशलेम लाया था,

मन्दिर में रखा। और दाऊद के अनुसार, वाचा का यह सन्दूक पृथ्वी पर परमेश्वर के चरणों की पीढ़ी थी। जैसा कि दाऊद ने 1 इतिहास 28:2 में घोषणा की :

> मेरी इच्छा तो थी कि यहोवा की वाचा के सन्दूक के लिये, और हम लोगों के परमेश्वर के चरणों की पीढ़ी के लिये विश्राम का एक भवन बनाऊँ, और मैं ने उसके बनाने की तैयारी की थी (1 इतिहास 28:2)।

जैसा कि यशायाह 66:1 हमें बताता है, परमेश्वर का सिंहासन स्वर्ग में है, लेकिन उसके सिंहासन की चौकी, जहाँ उसके पैर पृथ्वी को छूते हैं, मंदिर में वाचा का सन्दूक है। परमेश्वर की दृश्य महिमा ने मंदिर को भर दिया, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ने अदन की वाटिका में आदम और हव्वा को दर्शन दिया था। यरूशलेम का मंदिर पृथ्वी पर परमेश्वर के शासन का केंद्रबिंदु बन गया।

अतः हम देखते हैं कि दाऊद और सुलैमान के समय तक, इस्राएल अब्राहम के दिनों में एक प्रवासी गोत्र से, निर्गमन और विजय के द्वारा स्थापित एक राष्ट्र में, और फिर एक राजा और यरूशलेम नगर में एक मंदिर के साथ एक साम्राज्य में विकसित हो गया था। लेकिन इस्राएल को इस बिंदु तक लाने में परमेश्वर का क्या उद्देश्य था? इस्राएल के साम्राज्य का बड़ा लक्ष्य क्या था? भजन 72:1-17 में भजनकार ने दाऊद के घराने के शासन के अधीन इस्राएल की गौरवशाली मंजिल का वर्णन इस प्रकार किया :

> हे परमेश्वर, राजा को अपना नियम बता, राजपुत्र को अपना धर्म सिखला! ... वह समुद्र से समुद्र तक और महानद से पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करेगा। ... सब राजा उसको दण्डवत् करेंगे, जाति जाति के लोग उसके अधीन हो जाएँगे। ... उसका नाम सदा सर्वदा बना रहेगा; जब तक सूर्य बना रहेगा, तब तक उसका नाम नित्य नया होता रहेगा। और लोग अपने को उसके कारण धन्य गिनेंगे, सारी जातियाँ उसको धन्य कहेंगी। (भजन 72:1-17)

इस अनुच्छेद में भजनकार ने "राजा" और "राजपुत्र" के लिए प्रार्थना की। उसने प्रार्थना की कि दाऊद के राजवंश की पहचान "नियम" और "धर्म" से होगी। लेकिन उसने दाऊद के शासन को पूरी पृथ्वी तक फैलाने के लिए भी प्रार्थना की — कि वह "समुद्र से समुद्र तक," "महानद से पृथ्वी की छोर तक" शासन करे। उसने प्रार्थना की कि "सब राजा" इस्राएल के राजा के सामने झुकें और उसकी सेवा करें। उसने प्रार्थना की कि राजा का "नाम सदा सर्वदा बना रहे" और “जब तक सूर्य बना रहेगा, तब तक उसका नाम नित्य नया होता रहे।” इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि फिर पद 17 में, भजनकार ने दाऊद के राजवंश के बारे में ये शब्द लिखे : “लोग अपने को उसके कारण धन्य गिनेंगे, सारी जातियाँ उसको धन्य कहेंगी।”

उत्पत्ति 12:3 में परमेश्वर की प्रतिज्ञा का संकेत — कि अब्राहम पृथ्वी के सब कुलों के लिए एक आशीष बनेगा — यहाँ स्पष्ट है। अब्राहम और उसके वंशजों को चुनने का परमेश्वर का उद्देश्य अंततः तब पूरा होगा जब दाऊद का घराना सब जातियों में परमेश्वर की आशीष को फैलाएगा। तब विश्वासयोग्य लोगों को न्याय मिलेगा, और पूरी पृथ्वी पर समृद्धि और शांति भरपूरी में होगी। भविष्य के इस रूपक को ध्यान में रखते हुए, भजनकार ने पद 19 में परमेश्वर को अर्पित इस शानदार स्तुति के साथ समाप्त किया :

> उसका महिमायुक्त नाम सर्वदा धन्य रहेगा; और सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण होगी। आमीन फिर आमीन। (भजन 72:19)

भजन 72:19 इस्राएल में कुलपतियों की प्रतिज्ञाओं से लेकर निर्गमन तथा विजय और फिर साम्राज्य तक हुए सब विकासों के अंतिम लक्ष्य को प्रकट करता है। राज्य के इन सभी चरणों का उद्देश्य पूरी पृथ्वी को परमेश्वर की महिमा से भरना था। जब परमेश्वर का राज्य दाऊद के घराने के शासन के द्वारा इस्राएल की सीमाओं से पृथ्वी की छोर तक फैल जाता है, तो परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति पूरे संसार को वैसे ही भर देगी जैसे यह स्वर्ग को भर देती है।

> एक दिन पूरी पृथ्वी परमेश्वर के प्रकाश से भर जाएगी। यह इसके हर कोने और दरार में भर जाएगा जिससे, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के प्रतीकात्मक रूपक के अनुसार, सूर्य की भी आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि परमेश्वर की महिमा प्रकाश करेगी, यह पूरे ब्रह्मांड में फैल जाएगी। हम उत्पत्ति 1 में प्रस्तुत उस योजना को देखते हैं जहाँ परमेश्वर नर और नारी को अपने स्वरूप में बनाता है, और फिर वह उन्हें पृथ्वी को भरने और इसे अपने वश में करने के लिए कहता है, इससे वह हमें दिखाता है कि उत्पत्ति 1 में भी परमेश्वर की योजना केवल वाटिका को भरने की नहीं थी, बल्कि पूरी पृथ्वी को अपने स्वरूप, आराधना करनेवाले स्वरूप से भरने की थी, जो उसके समक्ष उसकी महिमा को प्रकट करे।
>
> — डॉ. स्कॉट रेड

यहाँ तक, हमने देखा है कि कैसे पुराना नियम विशाल और संकीर्ण अर्थों में परमेश्वर के राज्य के बारे में बात करता है, और कैसे अति प्राचीन इतिहास और इस्राएल जाति के इतिहास के दौरान परमेश्वर का राज्य विकसित हुआ। अब हम अपने अंतिम विषय की ओर मुड़ेंगे : नए नियम के युग में परमेश्वर के राज्य की पूर्णता।

नया नियम

यदि कोई एक बात है जिसकी सभी मसीहियों को पुष्टि करनी चाहिए, तो वह यह है : यीशु की सेवकाई का हृदय, पूरे नए नियम का हृदय, सुसमाचार है। मसीही सुसमाचार की घोषणा, या "शुभ-संदेश," हमारे मसीही विश्वास का केंद्र है। हालाँकि हममें से अधिकांश इससे सहमत होंगे, फिर भी हम अक्सर इस बात पर विचार नहीं करते हैं कि मसीही शुभ-संदेश पुराने नियम में कितनी गहराई तक निहित है। मसीही विश्वास का शुभ-संदेश यह घोषणा है कि यीशु अतीत में परमेश्वर के राज्य की विफलताओं पर विजय प्राप्त करता है और परमेश्वर के विजयी शासन को संसार की छोर तक फैलाने में सफल होता है। हम इस शुभ-संदेश पर विश्वास करते हैं। यह परमेश्वर के राज्य का शुभ-संदेश है।

सुनिए मत्ती ने मत्ती 4:23 में कैसे यीशु के उपदेश का सार प्रस्तुत किया है :

> यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन के आराधनालयों में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा (मत्ती 4:23)।

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, यीशु "सुसमाचार प्रचार करता" या शुभ-संदेश सुनाता रहा। लेकिन यह शुभ-संदेश किस बारे में था? यह "राज्य" के बारे में शुभ-संदेश था। जिस शुभ-संदेश पर हम विश्वास करते हैं और दूसरों को सुनाते हैं वह यह है कि मसीह परमेश्वर के महिमामय राज्य के, जैसा वह स्वर्ग में है, पृथ्वी पर आने की पुराने नियम की सब आशाओं को पूरा करता है।

> जब हम राज्य के सुसमाचार, या परमेश्वर के शासन के शुभ-संदेश के बारे में बात करते हैं, तो यह हमें इस बात को सोचने में मदद करता है कि आरंभिक विश्वासियों ने, जिनके लिए बाइबल पुराने नियम का यूनानी अनुवाद, अर्थात् सेप्टुआजिंट थी, क्या सोचा होगा। यशायाह 52 में परमेश्वर घोषणा करता है कि वह अपने लोगों को पुनर्स्थापित करने जा रहा है, और वह कहता है... "पहाड़ों पर

> उसके पाँव क्या ही सुहावने हैं जो शुभ समाचार लाता है... और शुभ समाचार का संदेश देता है जो सिय्योन से कहता है, "तेरा परमेश्वर राज्य करता है!"और इसे शांति का शुभ-संदेश कहा जाता है, अतः यह परमेश्वर की शांति का शुभ-संदेश है, यह परमेश्वर के शासन का शुभ-संदेश है, यह शुभ-संदेश है कि परमेश्वर अपने लोगों को बचा रहा है, कि परमेश्वर इस संसार में धार्मिकता और न्याय को लाने के लिए अपने लोगों की ओर से कार्य कर रहा है...लेकिन, जब यीशु पहली बार आया तो उसने पहले से हमें इसका एक नमूना दिया, एक पूर्वानुभव दिया जब वह लोगों को चंगा कर रहा था और अपने अद्भुत कार्य कर रहा था। वे किसी ऐसी बात का पूर्वाभास थे जिसका और अधिक अनुभव हम पूर्णता में आए राज्य में करेंगे।
>
> — डॉ. क्रेग एस. कीनर

हम नए नियम में परमेश्वर के राज्य का अध्ययन करेंगे जैसे हमने बाइबल के इतिहास के अन्य चरणों का अध्ययन किया है। हम पहले यह देखेंगे कि नया नियम परमेश्वर के राज्य के स्थान के बारे में क्या कहता है। दूसरा, हम राज्य के लोगों के बारे में बात करेंगे। और तीसरा, हम नए नियम के समय के दौरान राज्य की प्रगति पर ध्यान देंगे। आइए सबसे पहले नए नियम में परमेश्वर के राज्य के स्थान को देखें।

स्थान

दुःख की बात है कि मसीह के कई अच्छे अनुयायी भी यह मानते हैं कि नए नियम के विश्वास का पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य से कोई लेना-देना नहीं है। हम अक्सर सुनते हैं कि पुराना नियम भौतिक संसार पर केंद्रित था, लेकिन नए नियम का विश्वास अभौतिक स्वर्गीय वास्तविकताओं और आंतरिक आत्मिक विषयों पर केंद्रित है। अब, ऐसे तरीके हैं जिनमें यह सच है। मसीह के अनुयायियों की नागरिकता सांसारिक राज्यों की अपेक्षा स्वर्ग की है, क्योंकि इस समय, हमारा राजा, यीशु, पिता के दाहिने हाथ पर स्वर्ग में हैं। हम आंतरिक आत्मिक विषयों पर भी ध्यान केंद्रित करते हैं क्योंकि, इस समय पवित्र आत्मा हमें आंतरिक रूप से नया बनाता है, भले ही हमारे शरीर भ्रष्ट होते जाते हैं। परंतु हमें यहाँ बहुत सावधान रहना होगा। नए नियम का विश्वास पुराने नियम के परमेश्वर के पृथ्वी पर के राज्य के उद्देश्यों से अलग नहीं है। बल्कि, नए नियम का विश्वास यह घोषणा करता है कि यीशु पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरण को पूरा करता है। वह शांति, आनंद और भलाई के इस राज्य को पृथ्वी की छोर तक फैला रहा है।

कई रूपों में, नए नियम में परमेश्वर के राज्य के स्थान की ओर वही दृष्टिकोण है जैसा हम पुराने नियम में पाते हैं। सबसे पहले, नया नियम दर्शाता है कि मसीह का राज्य का कार्य परमेश्वर के शासन के भौगोलिक केंद्र, अर्थात् इस्राएल के देश में शुरू हुआ। और दूसरा, नया नियम इस बात पर भी बल देता है कि कैसे मसीह पृथ्वी की छोर तक अपने शासन के भौगोलिक विस्तार के लिए परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करता है। आइए सबसे पहले नए नियम के युग में परमेश्वर के राज्य के भौगोलिक केंद्र को देखें।

केंद्र

अति प्राचीन इतिहास के दौरान, अदन और उसकी पवित्र वाटिका परमेश्वर के राज्य का भौगोलिक केंद्रबिंदु थे। वहाँ से, मनुष्यजाति को पृथ्वी की छोर तक परमेश्वर के शासन को फैलाना था। बाद में, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के देश में इस्राएल जाति में अपना राज्य बनाया। और वहाँ से, परमेश्वर के लोगों ने राज्य को पृथ्वी की छोर तक फैलाना शुरू किया। पृथ्वी पर परमेश्वर के शासन का यह केंद्रबिंदु पुराने नियम के विश्वास के लिए इतना महत्वपूर्ण था कि हमें यह जानकर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि यह यीशु, अर्थात् इस्राएल के मसीहा के जीवन में भी महत्वपूर्ण था।

अपने बचपन के दौरान मिस्र में कुछ समय बिताने के अलावा, यीशु ने अपना पूरा जीवन प्रतिज्ञा के देश में बिताया। यीशु का जन्म इस्राएल देश में हुआ था। वह बड़ा हुआ, उसने अपने चेलों को बुलाया, सेवा की, मारा गया, फिर से जीवित हुआ, और वहाँ से स्वर्ग में चढ़ गया। और पिन्तेकुस्त के दिन भी, यीशु ने बहुत से यहूदियों को जो अन्यजातियों में तितर-बितर हो गए थे, सुसमाचार सुनने के लिए प्रतिज्ञा के देश में फिर से इकट्ठा किया।

यह समझने के लिए कि यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई का यह स्थान इतना महत्वपूर्ण क्यों है, हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि यीशु के जन्म से पहले प्रतिज्ञा के देश में क्या हुआ था। दाऊद और उसके वंशजों के शासन के तहत, परमेश्वर ने इस्राएल को प्रतिज्ञा के देश में एक राज्य के रूप में स्थापित किया। लेकिन पुराने नियम के इतिहास के अंत में, एक बड़ी त्रासदी घटी। इस्राएल के लोगों और उनके राजाओं ने परमेश्वर के विरुद्ध इतना विद्रोह किया कि परमेश्वर ने अधिकांश इस्राएलियों को उस देश से निर्वासन में भेज दिया। अन्यजाति के राष्ट्रों और जिन झूठे देवताओं की वे सेवा करते थे, उन्होंने उन इस्राएलियों पर भी शासन किया जो अब भी प्रतिज्ञा के देश के खंडहरों में रहते थे।

यीशु के पृथ्वी पर आने से पहले, इस्राएल की संतान को 500 से अधिक वर्षों तक परमेश्वर के इस दंड के अधीन कष्ट सहना पड़ा। यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई के दौरान भी, प्रतिज्ञा का देश रोमी साम्राज्य के शासन के अधीन था। वह देश पाप और अंधकार से भरा हुआ था। यह बुरी आत्माओं से ग्रस्त था। लेकिन यीशु इन कठिन परिस्थितियों को उलटने और परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरण को पृथ्वी पर लाने के लिए आया। लूका 4:17-19 में नासरत के आराधनालय में यीशु के आरंभिक उपदेशों में से एक के बारे में लूका के विवरण को सुनें :

> **यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक [यीशु को] दी गई, और उसने पुस्तक खोलकर, वह जगह निकाली जहाँ यह लिखा था : "प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है कि बन्दियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ, और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूँ" (लूका 4:17-19)।**

यहाँ यीशु ने परमेश्वर के राज्य के उद्देश्यों की सफलता के लिए पुराने नियम की आशाओं का उल्लेख किया। यशायाह 61 से ली गई इस भविष्यवाणी में भविष्यवाणी की गई कि जब निर्वासन का दंड समाप्त होगा तो परमेश्वर अपने लोगों पर आशीषें उंडेलेगा। यीशु ने निर्वासन के शाप के अधीन इस्राएल के लोगों की भयानक परिस्थितियों का वर्णन करने के लिए "कंगालों," "बंदियों," "अंधों" और "कुचले हुओं" का उल्लेख किया। लेकिन उन्होंने अपने साथ के लोगों को यह भी याद दिलाया कि निर्वासन को समाप्त करने के लिए किसी की प्रतिज्ञा की गई थी। उस पर "प्रभु का आत्मा" होगा; ऐसा व्यक्ति जिसे परमेश्वर ने "अभिषेक" किया हो। यह अभिषिक्त जन, अर्थात् मसीहा राजा, "प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का" या अपने लोगों के प्रति अनुग्रह का प्रचार करेगा। वह "कंगालों" को "सुसमाचार" या शुभ-संदेश सुनाएगा, "बंदियों को छुटकारा" देगा, "अंधों को दृष्टि" देगा, और वह "कुचले हुओं" को छुड़ाएगा। अब सुनें कि आशा के इन शब्दों को पढ़ने के बाद यीशु ने लूका 4:20-21 में क्या किया :

> **[यीशु ने] पुस्तक बन्द करके सेवक के हाथ में दे दी और बैठ गया; और आराधनालय के सब लोगों की आँखें उस पर लगी थीं। तब वह उनसे कहने लगा, "आज ही यह लेख तुम्हारे सामने पूरा हुआ है (लूका 4:20-21)"।**

यीशु ने साहसपूर्वक घोषणा की कि वह वही व्यक्ति है जिसके बारे में पुराने नियम में भविष्यवाणी की गई थी कि वह इस्राएल के निर्वासन को समाप्त करेगा और अपने लोगों पर परमेश्वर के अनुग्रह को उंडेलेगा। इसीलिए नया नियम इस बात पर बहुत ध्यान देता है कि यीशु ने प्रतिज्ञा के देश में क्या किया।

वह सबसे पहले इस्राएल के देश में आया ताकि पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के भौगोलिक केंद्र में अब्राहम की संतान में से बचे हुए विश्वासयोग्य लोगों को छुड़ाए।

अब, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि नए नियम में परमेश्वर के राज्य का भौगोलिक केंद्र प्रतिज्ञा का देश था। लेकिन यह ध्यान में रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि पृथ्वी की छोर तक परमेश्वर के राज्य का अंतिम, और पूरी तरह से सफल भौगोलिक विस्तार यीशु के पहले आगमन से शुरू हुआ था।

विस्तार

जैसा कि हमने पहले देखा था, मत्ती 6:10 में यीशु ने यह कहते हुए अपने चेलों को परमेश्वर के राज्य के पूरे संसार में फैलने के लिए प्रार्थना करना सिखाया :

> **तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो (मत्ती 6:10)।**

अपनी पूरी सेवकाई में, यीशु ने अपने चेलों की दृष्टि को इस विश्वव्यापी लक्ष्य पर केंद्रित रखा। जैसा कि हम मत्ती 24:14 में पढ़ते हैं, यीशु ने अपने चेलों से कहा :

> **राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा (मत्ती 24:14)।**

परमेश्वर के राज्य के आगमन के शुभ-संदेश का संदेश पूरे संसार में फैलाया जाना था, और तब यीशु वापस आएगा। नया नियम इस बात पर बल देता है कि यीशु और उसके पहली सदी के प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं ने प्रतिज्ञा के देश से संसार के सभी देशों में परमेश्वर के राज्य को फैलाने के लिए स्वयं को समर्पित किया।

नए नियम में परमेश्वर के राज्य के स्थान के प्रति इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, हमें अपना ध्यान नए नियम में राज्य के लोगों की ओर लगाना चाहिए।

लोग

आदि में, परमेश्वर ने ठहराया कि मनुष्यों को परमेश्वर के राज्य को फैलाना था। परमेश्वर ने इस्राएल को एक विशेष रूप से इस कार्य के लिए बुलाया और दाऊद के घराने को नियुक्त किया कि वे इस बुलाहट को पूरा करने में इस्राएल जाति की अगुवाई करें। लेकिन जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, पुराने नियम के इतिहास के अंत तक दाऊद का घराना और इस्राएल के लोग इस बुलाहट से इतने दूर हो गए थे कि परमेश्वर ने उन्हें निर्वासन में भेजने का दंड दिया। और सैकड़ों वर्षों तक इस्राएल के लोगों को परमेश्वर के शत्रुओं के अत्याचार को सहना पड़ा।

इसलिए, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यीशु और उनके अनुयायियों ने "सुसमाचार" या शुभ-संदेश के बारे में बात की। उन्होंने शुभ-संदेश की घोषणा की कि मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर की मूल योजना यीशु द्वारा पूरी होने वाली थी। यीशु परमेश्वर के शत्रुओं को हराएगा और पूरी पृथ्वी पर परमेश्वर के लोगों को आशीष देगा।

यह समझने के लिए कि नया नियम कैसे परमेश्वर के राज्य के लोगों का ध्यान आकर्षित करता है, हम दो विषयों पर बात करेंगे : पहला, परमेश्वर के सर्वोच्च, पूर्ण धर्मी स्वरूप के रूप में स्वयं मसीह की सेवा; और दूसरा, परमेश्वर के नए स्वरूपों के रूप में विश्वासियों की सेवा। आइए पहले परमेश्वर के सर्वोच्च स्वरूप के रूप में मसीह की विश्वासयोग्य सेवा को देखें।

मसीह

कई क्षेत्रों में, मसीहियों को इस बात की बहुत कम जानकारी है कि त्रिएकता का दूसरा व्यक्तित्व, अनंत *लोगोस*, देहधारी क्यों हुआ। हम सही रूप से मानते हैं कि यीशु पूरी तरह से परमेश्वर और पूरी तरह से मनुष्य है, लेकिन हम अक्सर लगभग पूरी तरह से मसीह के परमेश्वरत्व पर ध्यान केंद्रित करते हैं। और इसके फलस्वरूप, आज मसीह के अनुयायी यह समझाने में मुश्किल महसूस करते हैं कि अनंत त्रिएकता का दूसरा व्यक्तित्व हममें से एक क्यों बन गया। यीशु का देहधारण क्यों आवश्यक था? नये नियम का उत्तर सीधा है : यीशु उस महत्वपूर्ण भूमिका को पूरा करने के लिए मनुष्य बना जिसे परमेश्वर ने शुरू से ही उसके स्वरूप के लिए नियुक्त किया था।

ऐसे कई तरीके हैं जिनमें नया नियम मसीह के मनुष्यत्व के इस महत्व को प्रकट करता है, लेकिन हम केवल दो दिशाओं में देखेंगे : पहला, नए नियम की यह शिक्षा कि यीशु अंतिम आदम है; और दूसरा, यह तथ्य कि यीशु परमेश्वर का याजक है और दाऊद के घराने का राजा है। तो फिर, नए नियम का क्या अर्थ है जब यह कहता है कि यीशु अंतिम आदम है?

अंतिम आदम। पवित्रशास्त्र का लगभग हर विद्यार्थी जानता है कि प्रेरित पौलुस ने आदम और मसीह के बीच एक समानता को रखा। रोमियों 5:12-21 और अन्य अनुच्छेदों में, पौलुस ने सिखाया कि आदम का पाप परमेश्वर की दृष्टि में इतना बड़ा था कि उसने मनुष्यजाति को नश्वरता और अनंत दंड के अधीन कर दिया। लेकिन, जैसा कि पौलुस ने स्पष्ट भी किया, क्रूस पर अपनी पीड़ा और मृत्यु के द्वारा परमेश्वर के प्रति यीशु की सिद्ध आज्ञाकारिता परमेश्वर की दृष्टि में इतनी महत्वपूर्ण थी कि वह उन सब के लिए अनंत जीवन लेकर आया जो उस पर विश्वास करते हैं। 1 कुरिन्थियों 15:21-22 को सुनें कि कैसे पौलुस ने इस संबंध में यीशु के मनुष्यत्व के महत्व पर बल दिया। पौलुस ने लिखा :

> क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई, तो मनुष्य ही के द्वारा मरे हुओं का पुनरुत्थान भी आया। और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएँगे (1 कुरिन्थियों 15:21-22)।

हम उद्धार को परमेश्वर के अनुग्रह का एक मुफ्त दान मानने के इतने आदी हो गए हैं कि हममें से कई लोगों ने पौलुस से कुछ इस तरह लिखने की अपेक्षा की होगी : क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई, तो *परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा* मरे हुओं का पुनरुत्थान भी आया। अब, यह निश्चित रूप से सच होगा क्योंकि मसीह में उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह ही से है। लेकिन यह वह नहीं है जिस पर प्रेरित ने *यहाँ* जोर दिया है।

बल्कि, पौलुस ने लिखा कि जैसे एक मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई — अर्थात् आदम — वैसे ही मृतकों में से पुनरुत्थान, उद्धार का लक्ष्य भी एक *मनुष्य* — अर्थात् मसीह — के द्वारा आता है। पहले मनुष्य, अर्थात् परमेश्वर के पहले स्वरूप के रूप में आदम परमेश्वर के राज्य के उद्देश्यों को पूरा करने में विफल रहा और हम सब के लिए मृत्यु लाया। परन्तु परमेश्वर ने कभी अपनी आज्ञा को नहीं पलटा कि उसका राज्य मनुष्यों के द्वारा पृथ्वी पर आएगा। इसलिए, एक *मनुष्य* अर्थात् परमेश्वर के एक धर्मी, पूर्ण आज्ञाकारी स्वरूप के लिए यह आवश्यक था कि वह उस कार्य को पूरा करे जिसे आदम करने में विफल रहा। हज़ारों वर्षों तक, परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों ने ऐसे एक मनुष्य के लिए प्रार्थना की। और मसीह वह धर्मी मनुष्य है जो उद्धार लाता है, वह उस पर विश्वास करनेवाले सब लोगों के लिए परमेश्वर के राज्य में पुनरुत्थान का जीवन लाता है।

> यीशु परमेश्वर का आदर्श स्वरूप है। यीशु दूसरा आदम है, जैसा कि हम 1 कुरिन्थियों 15:45 में पढ़ते हैं, "अंतिम आदम", जो परमेश्वर की सामर्थ्य था। और परमेश्वर की असाधारण सामर्थ्य यीशु की सिद्धता में प्रकट हुई क्योंकि वह एक ऐसा मनुष्य बना जिसने पाप नहीं किया, एक ऐसा मनुष्य जो पाप से उत्पन्न नहीं हुआ था। यदि हम मत्ती 1:19-20 को देखें, तो हम देखते हैं कि यीशु की आत्मा

> यूसुफ या मरियम या आदम के वंश से नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा से आई थी। अतः उसका जीवन एक ऐसा जीवन था जो भीतर से सिद्ध था; उसकी पवित्रता भीतर से सिद्ध थी, तब भी जब वह मानवीय देह और लहू में था।
>
> — योहानेस प्राप्टोवर्सो, Ph.D.

अब अंतिम आदम होने के अतिरिक्त, नया नियम इस बात पर भी जोर देता है कि मसीह राज्य के अंतिम चरणों में परमेश्वर के याजक और राजा के रूप में कार्य करता है।

याजक और राजा। आपको याद होगा कि आदम और हव्वा ने सबसे पहले राजकीय याजकों के रूप में परमेश्वर की सेवा की। और परमेश्वर ने इस्राएल जाति को याजकों के राज्य के रूप में उसकी सेवा में संपूर्ण मनुष्यजाति की अगुवाई करने के लिए बुलाया। हमने यह भी देखा है कि जब इस्राएल एक पूर्ण राज्य में विकसित हुआ, तो परमेश्वर ने अपने राजकीय याजकों के रूप में सेवा करने के लिए याजकों और राजाओं का अभिषेक किया, विशेष रूप से दाऊद और उसके वंश का। इसीलिए इब्रानियों के लेखक ने बार-बार मसीह राजकीय याजकपद पर जोर दिया। जैसा कि उसने इब्रानियों 4:14 में लिखा :

> हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु (इब्रानियों 4:14)।

क्रूस पर मरते समय यीशु ने स्वयं को पाप के लिए अंतिम बलिदान के रूप में प्रस्तुत किया। उसने उस पर विश्वास करनेवाले सब लोगों के बदले परमेश्वर के दंड को अपने ऊपर ले लिया।

इसके अतिरिक्त, नया नियम इस बात पर भी जोर देता है कि यीशु, अर्थात् दाऊद के घराने का धर्मी अभिषिक्त जन, सदा-सर्वदा के लिए दाऊद के सिंहासन पर विराजमान है। सुनिए किस प्रकार लूका 1:32-33 में जिब्राएल स्वर्गदूत ने मरियम के सामने यीशु के जन्म की घोषणा की :

> वह महान् होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा, और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा (लूका 1:32-33)।

क्योंकि मसीह ने दाऊद के घराने के राजकीय याजकपद को सिद्धता से पूरा किया, इसलिए उसकी अगुवाई में परमेश्वर के राज्य का कभी अंत नहीं होगा। परमेश्वर के राज्य के उद्देश्य यीशु के शासन के द्वारा पूरे होंगे।

जब हम नए नियम के युग में परमेश्वर के राज्य के लोगों पर विचार करते हैं, तो निस्संदेह मसीह परमेश्वर का सर्वोच्च स्वरूप है जो उस सेवा को पूरा करता है जो परमेश्वर ने आदम, इस्राएल और दाऊद के घराने को दी थी। लेकिन नया नियम इस बात पर भी जोर देता है कि सब सच्चे विश्वासी मसीह से जुड़े हुए हैं, इसलिए कलीसिया भी अब परमेश्वर के राज्य के लोगों के रूप में कार्य करती है।

विश्वासी

नए नियम की अवधि की शुरुआत में, मसीही कलीसिया में लगभग सब लोग यहूदी ही थे — अर्थात् अब्राहम के शारीरिक वंशज जिन्होंने मन फिराया और यीशु पर मसीह के रूप में भरोसा किया। यीशु और उसके प्रेरित और भविष्यवक्ता यहूदी थे, और पिन्तेकुस्त के दिन विश्वास करनेवाला प्रत्येक जन यहूदी था। नए नियम के युग के इस आरंभिक समय में, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के देश में रहनेवाले लोगों और अन्यजातियों के बीच बिखरे हुए लोगों में से यहूदियों के विश्वासयोग्य बचे हुए लोगों को इकट्ठा किया।

लेकिन कुछ ही समय बाद एक बहुत ही आश्चर्यजनक घटना घटी। परमेश्वर ने अपने राज्य में बड़ी संख्या में अन्यजातियों को लाने के द्वारा अपनी इस प्रतिज्ञा को पूरा करना शुरू किया कि अब्राहम और

उसका वंश परमेश्वर के राज्य की आशीषों को फैलाएँगे। यही कारण है कि नया नियम, गैर-यहूदी विश्वासियों सहित मसीह के सब अनुयायियों को परमेश्वर के नए स्वरूप बताता है। जैसा कि पौलुस ने इफिसियों 4:24 में समझाया, और विश्वासियों से कहा कि :

> नये मनुष्यत्व को पहिन लो जो परमेश्वर के अनुरूप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है (इफिसियों 4:24)।

और इसीलिए 1 पतरस 2:9 में पतरस ने नए नियम की कलीसिया — जिसमें यहूदी और अन्यजाति दोनों शामिल थे — का वर्णन परमेश्वर के राजकीय याजकपद के रूप में किया। वहाँ उसने लिखा :

> तुम एक चुना हुआ वंश, और राज–पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिये कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो (1 पतरस 2:9)।

यहाँ पतरस ने निर्गमन 19:6 का उल्लेख किया है, जहाँ परमेश्वर ने सबसे पहले इस्राएल जाति को अपना "याजकों का राज्य" कहा था। लेकिन पतरस ने इन शब्दों को कलीसिया, यहूदियों और अन्यजातियों दोनों, पर लागू किया।

पृथ्वी की हर जाति से मसीह के अनुयायियों को अब्राहम के परिवार में अपनाया गया है ताकि संपूर्ण मसीही कलीसिया "एक चुना हुआ वंश, राज–पदधारी याजकों का समाज, पवित्र लोग, परमेश्वर की निज प्रजा" हो। मसीह के सभी अनुयायी संसार में परमेश्वर के राजकीय याजकों के रूप में सेवा करते हैं। हम "मसीह के गुण प्रकट करते हैं" और उस मिशन को पूरा करते हैं जो सबसे पहले इस्राएल को दिया गया था कि वह संसार को परमेश्वर की आशीषों की ओर लेकर जाए ।

> 1 पतरस 2:8-9 में पतरस परमेश्वर के लोगों को बताता है कि वे कौन हैं और वे एक चुना हुआ वंश हैं, वे वास्तव में वे लोग हैं जिन्हें संसार से बाहर लाया गया है; वे परमेश्वर के हैं। पर उनके पास एक उद्देश्य है, और वह यह है कि वे याजक की भूमिका निभाएँ, जहाँ वे सचमुच मध्यस्थता कर सकें, पुराने याजकों की तरह नहीं जो बलिदान चढ़ाते थे, बल्कि ऐसे कि वे वास्तव में परमेश्वर के लोगों के लिए मध्यस्थता करें...परमेश्वर ने हमें यहाँ एक उद्देश्य के लिए रखा है, और वह वास्तव में यह है कि हम उसके गुण प्रकट करें, ताकि बहुत से लोग उसे जान सकें और उस पर विश्वास कर सकें। लेकिन हमें अलग होने के लिए भी बुलाया गया है, और इसका अर्थ है कि हम वास्तव में पवित्र लोग हैं। हमें अलग किए हुए लोग बनना है।
>
> — डॉ. वुयानी सिंदो

अब जबकि हमने नए नियम के युग में राज्य के स्थान और लोगों दोनों पर चर्चा कर ली है, तो हमें नए नियम में राज्य की प्रगति की ओर मुड़ना चाहिए।

प्रगति

कई रूपों में, नए नियम में परमेश्वर के राज्य की प्रगति हमें पवित्रशास्त्र में मिलनेवाली सबसे कट्टर शिक्षाओं में से एक है। यह इतनी कट्टर थी कि पहली सदी के अधिकांश यहूदियों ने यीशु को मसीहा के रूप में अस्वीकार कर दिया था। अब, यीशु के समय में यहूदियों के बीच कई संप्रदाय और विभाजन थे। हममें से अधिकांश ने उनके बारे में सुना है : फरीसी और सदूकी जिनके पास यरूशलेम में अधिकार था,

ज़लोती जिन्होंने युद्ध करने के द्वारा रोमी शासन को उखाड़ फेंकने की कोशिश की थी, और फिर जंगल में रहनेवाले कई बेनाम समुदाय। अपने कई मतभेदों के बावजूद, उन सब की आशा थी कि मसीहा जल्द ही आए और पूरे संसार में फैली बुराई पर परमेश्वर के राज्य की त्वरित और निर्णायक विजय को लाए। लेकिन यीशु और उसके पहली सदी के प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं ने इस बड़ी अपेक्षा को चुनौती दी। उन्होंने कुछ ऐसी घोषणा की जो तब तक छिपी हुई थी जब तक यीशु ने स्वयं उसे स्पष्ट नहीं किया : यीशु मसीहा है, लेकिन वह एक लंबे समय में परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर लाएगा।

मत्ती 13:31-32 को सुनें और उसे समझें जो यीशु ने समझाया कि परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर कैसे आएगा :

> **स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बो दिया। वह सब बीजों से छोटा तो होता है पर जब बढ़ जाता है तब सब साग–पात से बड़ा होता है; और पेड़ हो जाता है (मत्ती 13:31-32)।**

इस दृष्टांत में, यीशु ने घोषणा की कि परमेश्वर का राज्य अचानक और विनाशकारी रूप से आने के बजाय, राई के दाने की तरह छोटे से शुरू होगा। लेकिन समय के साथ, राज्य बढ़ता और फैलता हुआ राई के एक बड़े पेड़ की तरह बन जाएगा। जैसा कि शेष नया नियम हमें बताता है, राज्य की शुरुआत यीशु की पृथ्वी की सेवकाई के साथ छोटे और शांत तरीके से हुई। लेकिन अंत में, जब मसीह वापस आएगा तो उसका राज्य पूरी पृथ्वी पर फैल जाएगा।

इस शिक्षा के अनुरूप, हम नए नियम के युग में परमेश्वर के राज्य की प्रगति के बारे में बात करेंगे जो तीन मुख्य चरणों में प्रकट होती है। पहला चरण राज्य के उद्घाटन का था जो मसीह और उसके पहली सदी के प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की सेवकाई में हुआ था। 2000 वर्ष से भी पहले, यीशु ने पृथ्वी पर परमेश्वर के महिमामय राज्य के अंतिम विजयी चरण की शुरुआत की थी। इसीलिए इफिसियों 2:20 में प्रेरित पौलुस ने कलीसिया के बारे में कहा कि तुम,

> **प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो (इफिसियों 2:20)।**

हम मसीह में परमेश्वर के राज्य के दूसरे चरण को राज्य की निरंतरता कह सकते हैं। यह समय की वह लंबी अवधि है जिसमें परमेश्वर का राज्य पूरे कलीसियाई इतिहास के दौरान बढ़ता है। इस समय के दौरान, मसीह पूरे संसार में सुसमाचार की घोषणा के द्वारा अपने राज्य का विस्तार करना जारी रखता है। और वह अपने अनुयायियों से कहता है कि वे परमेश्वर के राज्य के प्रसार को अपनी सबसे बड़ी प्राथमिकता बनाएँ। जैसा कि यीशु ने मत्ती 6:33 में घोषणा की :

> **पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो (मत्ती 6:33)।**

अपने जीवन के प्रत्येक दिन हमें पूरे संसार में परमेश्वर के राज्य, परमेश्वर के धर्मी शासन के विस्तार की खोज करनी है।

मसीह में परमेश्वर के राज्य का तीसरा चरण राज्य की भविष्य की पूर्णता है। यह वह समय है जब मसीह वापस आएगा और पूरे संसार को अपने राज्य में बदलने की परमेश्वर की योजना को पूरा करेगा। सुनिए किस प्रकार यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 11:15 में परमेश्वर के राज्य के इस अंतिम चरण का वर्णन किया है :

> **जब सातवें दूत ने तुरही फूँकी, तो स्वर्ग में इस विषय के बड़े बड़े शब्द होने लगे : "जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया, और वह युगानुयुग राज्य करेगा" (प्रकाशितवाक्य 11:15)।**

जब मसीह पृथ्वी पर लौटेगा, तो वह परमेश्वर के हर शत्रु को हरा देगा, और जगत का राज्य परमेश्वर और उसके मसीह का राज्य बन जाएगा। और उस समय से "वह युगानुयुग राज्य करेगा।"

मसीह के अनुयायियों के रूप में, हम उन सब कार्यों को देखते हैं जिन्हें उसने राज्य के उद्घाटन में पूरा किया था। हम यीशु के जीवन, मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण तथा दो हजार वर्ष पहले पवित्र आत्मा के उंडेले जाने पर अपना विश्वास और अपनी आशा रखते हैं। हम राज्य की निरंतरता के दौरान मसीह जो कर रहा है उस पर भी अपना विश्वास और अपनी आशा रखते हैं। स्वर्ग पर उठाए गए मसीह की अगुवाई में, और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में, कलीसिया ने सब जातियों के बीच शुभ-संदेश को फैलाना जारी रखा है। और निस्संदेह, हम अपना विश्वास और अपनी आशा इस बात पर रखते हैं कि मसीह भविष्य में राज्य की पूर्णता पर क्या करेगा। मसीह महिमा के साथ लौटेगा और परमेश्वर की महिमा से भरपूर नई सृष्टि को लेकर आएगा।

उपसंहार

इस अध्याय में, हमने उस एकीकृत विषय को प्रस्तुत किया है जो पुराने नियम में दिखाई देनेवाली हर बात को एक साथ जोड़ता है : वह है, परमेश्वर का राज्य। हमने देखा है कि कैसे पुराने नियम के सब लेखक मोटे तौर पर विश्वास करते थे कि परमेश्वर हमेशा इतिहास पर सर्वोच्च रहा है और हमेशा रहेगा। लेकिन वे एक संकीर्ण अर्थ में यह भी मानते थे कि परमेश्वर का शासन समय के साथ प्रकट होगा ताकि परमेश्वर की आज्ञाएँ पृथ्वी पर वैसे ही पूरी हों जैसे वे स्वर्ग में होती हैं। इतिहास के इस लक्ष्य तक पहुँचने की शुरुआत अति प्राचीन इतिहास से हुई। यह इस्राएल जाति के इतिहास में परमेश्वर के कार्य में आगे बढ़ा। और इतिहास का यह लक्ष्य नए नियम के युग में मसीह में पूरा हुआ है।

पुराने नियम का अध्ययन करनेवाला प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि यह असमंजस में डालनेवाला हो सकता है। इसलिए, बड़ी तस्वीर को ध्यान में रखना हमेशा महत्वपूर्ण होता है। पुराने नियम के सब लेखकों के पास परमेश्वर के राज्य के बारे में समान धारणाएँ थीं और उन्होंने पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने के लिए अपनी पुस्तकें लिखीं। वे जानते थे कि परमेश्वर ने संसार को अपना राज्य बनाने के लिए रचा है, और वह इसे अपनी महिमा से भर देगा, और एक दिन वह प्रत्येक प्राणी से अनंत स्तुति को प्राप्त करेगा। परमेश्वर इस लक्ष्य को मनुष्यों, अर्थात् अपने स्वरूपों के द्वारा पूरा करेगा। और बुराई की चुनौतियों के बावजूद, यह राज्य विफल नहीं होगा। पुराना नियम हर मोड़ पर यह आशा रखता है कि यीशु ही वह है जो परमेश्वर के इस उद्देश्य को पूरा करेगा। यीशु परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर लाएगा। और वह उन सब को, जो उस पर विश्वास करते हैं, उस महिमामय राज्य में उसके साथ सदा-सर्वदा शासन करने का आनंद प्रदान करेगा।